RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष-12, अंक-11, हिन्दी (मासिक), नवंबर 2025, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

पेज@5

केंद्रीय मंत्री, राज्यों के कैबिनेट मंत्री, शिक्षाविद्, समाजसेवी, उद्योगपति सहित संतों ने लिया भाग

ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय में वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित

आपसी एकता और विश्वास से ही समाज, राष्ट्र और विश्व में आएगी खुशहाली-शांति

सम्मेलन का शुभारंभ ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, पंजाब सरकार के वित्तमंत्री हरपाल सिंह चीमा, आरएसएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार, संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी, अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई सहित अन्य अतिथियों ने किया।

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में छह देशों की छह हजार से अधिक शख्सियतों ने शिरकत की। मौका था वैश्विक शिखर सम्मेलन (9 से 12 अक्टूबर 2025) का। एकता और विश्वास- आदर्श भविष्य के लिए प्रेरणा विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में देश-विदेश से आए विद्वानों ने एक स्वर में कहा कि परिवार हो, समाज हो या राष्ट्र विश्व, एकता और विश्वास के बिना शांति, खुशहाली, समृद्धि और भाईचारा नहीं हो सकता है। यदि हमें सुखद भविष्य, आदर्श भविष्य की नींव रखनी है तो आपसी एकता और विश्वास को साथ लेकर चलना होगा। हमारी भारतीय संस्कृति की नींव और आधार ही वसुधैव कुटुम्बकम् है।

04 दिन चला वैश्विक शिखर सम्मेलन

07 सत्र आयोजित किए गए

40 से अधिक विद्वानों ने रखे अपने विचार

06 हजार देश-विदेश से आए लोगों ने लिया भाग

तीन श्रेणियों में उद्योग, समाजसेवा और मीडिया की शख्सियतों को किया सम्मानित

रेलमंत्री वैष्णव बोले- ब्रह्माकुमारीज़ ने आध्यात्मिक यज्ञ चलाकर एक-एक गांव, कस्बे, शहर को जोड़ा है

सम्मेलन के शुभारंभ सत्र में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संबोधित करते हुए रेलमंत्री वैष्णव ने कहा कि मुझे माउंट आबू आने का बहुत मन था, लेकिन कारणवश पहुंच नहीं पाया। मैं बृजमोहन भाई को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हम बहुत बड़े बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। विश्व में बड़ा बदलाव है- परहित की भावना टूट चुकी है। सब स्वार्थ से आगे बढ़ रहे हैं। जिओ पॉलिटिकल दृश्य में भारत बड़ा स्तम्भ बनकर उभरा है। भारत को विश्वास के साथ देखा जा रहा है। सबके प्रति सेवाभाव के साथ भारत काम कर रहा है। सबके विश्वास को साथ लेकर भारत काम कर रहा है। भारत ने कोविड वैक्सीन सब तक निस्वार्थ पहुंचाई। भारत पिछले दो हजार वर्षों में समावेशी देश रहा है। भारत में जो आध्यात्मिक शक्ति है जो विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलती है। आज विश्व में जो हमारा स्वाभाविक स्थान है, वह हमें हासिल करना है। हम सबको ताकत लगानी पड़ेगी। सबको मिलकर योगदान देना पड़ेगा। यही ब्रह्माकुमारी परिवार हमको सिखाता है कि हम अपने-अपने हिस्से का प्रयास करें। ब्रह्माकुमारीज़ ने जो आध्यात्मिक यज्ञ चलाया, एक-एक गांव, कस्बे, शहर को जोड़ा है। राजयोग ज्ञान से हमारी दिनचर्या में बदलाव लाया है।

चेतना जगा रही हैं ब्रह्माकुमारी

युद्ध विकास और मानवीय संवेदना को नष्ट करता है। इसलिए हमें युद्ध की जड़ अविश्वास और अहंकार को समाप्त करने की दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम के माध्यम से हमारी शक्तिस्वरुपा, देवी स्वरुपा बहनों के माध्यम से आने वाले सुखद भविष्य की कल्पना प्रतिष्ठित होने वाली है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का भी मूल संदेश भी यही है कि एक परमात्मा की संतान होने का बोध ही विश्व को एक परिवार बनाता है। यदि यह भावना हमारे अंतरराष्ट्रीय संबंधों को आधार बन जाए तो युद्ध की कोई आवश्यकता ही नहीं है। चेतना को जगाने का कार्य ब्रह्माकुमारी बहनें कर रही हैं। मीडिया चाहे तो नफरत को हवा दे सकता है व विश्वास और सद्भाव का सेतु भी बन सकता है।

- दुर्गादास उइक, केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार

सशक्तिकरण कर रही हैं बहनें

समापन सत्र में केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने वसुधैव कुटुम्बकम पर बोलते हुए कहा कि हमारे शरीर में पांच कर्मेन्द्रियां हैं, जिन्हें ऋषियों ने ज्ञानेन्द्रियां कहा है। जिससे हम कर्म करते हैं। अब मनुष्य भारतीय हो, चाहे यूरोप, रशिया, अमेरिका का हो, सबके पास ज्ञानेन्द्रियां हैं। बाल्टी पानी से भरी हुई है, आंख ने देखा पर उसे उठाता हाथ है, यहां कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों की एकता है। यही विश्वास भी पैदा करता है। आत्मा का प्रकाश बुद्धि पर पड़ने से सही निर्णय क्षमता मिलती है। ज़ी-20 समिट में पीएम नरेन्द्र मोदी ने भी यही ध्येय दिया वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर। हमने नई लोकसभा में पहला बिल नारी शक्ति वंदन अधिनियम पास किया। ब्रह्माकुमारी बहनों भी नारी सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रही हैं।

वैश्विक शिखर सम्मेलनः स्वागत सत्र

अतिथियों का माला, पगड़ी पहनाकर अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने सम्मान किया।

ब्रह्माकुमारीज़ के परिसर पर्यावरण संरक्षण का अनुपम उदाहरण हैं : सांसद बीवाई राघवेंद्र

वैश्विक शिखर सम्मेलन : स्वागत सत्र में जनप्रतिनिधि, कलाकार, पत्रकार, आध्यात्मवेत्ता समाजसेवी ने किया संबोधित

आबू रोड (राजस्थान)। वैश्विक शिखर सम्मेलन का स्वागत सत्र आर्थिक और पर्यावरणीय हितों में संतुलन विषय पर आयोजित किया गया। इसमें मप्र उज्जैन से आए मालव लोककला केंद्र, पुणे के आकार कथक डांस और आंध्रप्रदेश के तड़ीपत्री वंदना डांस अकादमी के कलाकारों ने जोरदार प्रस्तुति देकर समां बांध दिया।

समाज को आध्यात्मिक ज्ञान और मेडिटेशन की बहुत आवश्यकता है

आज पर्यावरण को संतुलित रखना चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन हमें मिलकर यह कार्य करना होगा। पर्यावरण की सुरक्षा करना हम सभी का दायित्व है। हर एक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण के लिए पहल करने की जरुरत है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से लोगों का जीवन शांतिमय बना रही है। आज मैंने माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर, पीस पार्क, पांडव भवन और तपोवन परिसर का भ्रमण किया जो पर्यावरण संरक्षण का अनुपम उदाहरण हैं। कर्नाटक सरकार के आबकारी मंत्री आरबी तिम्मापुर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाएं सराहनीय हैं। आज समाज को आध्यात्मिक ज्ञान और मेडिटेशन की बहुत आवश्यकता है। - **बीवाई राघवेंद्र ,** सांसद, शिमोगा, कर्नाटक

इंडिया वन सोलार थर्मल पावर प्लांट ऊर्जा के क्षेत्र में बना मिसाल

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा देश-विदेश पर्यावरण के क्षेत्र में जन जागरुकता लाने के लिए अनेक अभियान चलाए जा रहे हैं। जल संरक्षण के लिए जन जल अभियान चलाया गया। मृदा संरक्षण और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए अनेक परियोजनाएं चलाईं जा रही हैं। सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार और जर्मन सरकार के सहयोग से इंडिया वन सोलार थर्मल पावर प्लांट स्थापित किया गया है, जो नवीनीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में मिसाल बना हुआ है।

- राजयोगी गोलो जे. पिल्ज, पर्यावरणविद् एवं ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ सदस्य, जर्मनी

शुद्ध विचारों से मन के साथ शरीर भी होता है शांत

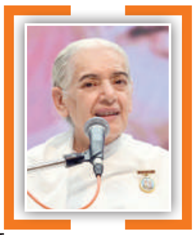

ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि आज दुनिया में तेजी से बढ़ रही मानसिक बीमारियों का पांच कारण हैं- पांच विकार। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार में डूबा मन स्वस्थ नहीं रह सकता है। शुद्ध विचारों से हमारा मन तो शांत होता ही है, साथ ही तन भी शांत होता है। हम मन की शांति, पवित्रता की शक्ति से अशुद्ध प्रकृति को फिर से शुद्ध बना सकते हैं। पहले चाहिए मन की हीलिंग। जब हम अपने आदि स्वरुप की स्मृति और परमात्मा की याद से उसे जागृत करते हैं, याद करते हैं तो आत्मा में शक्ति भरने लगती है। आत्मा फिर से पावरफुल हो जाती है। मूल रुप में मैं आत्मा शांत स्वरुप हूं। आत्मिक स्वरुप के अभ्यास से खुद के साथ प्रकृति का परिवर्तन कर सकते हैं। जब राजयोग मेडिटेशन करते हैं तो अंदर से हमें सुख और शांति की अनुभूति होने लगती है। अंदर की यात्रा से मन और आत्मा संतुष्ट हो जाती है। जब हमारे अंदर यह भावना आ जाती है कि हम सभी एक ही परिवार के हैं और हम सबका एक ही घर से तो दातापन की भावना आ जाती है।

सामाजिक बदलाव में जुटी है संस्था

ब्रह्माकुमारीज़ पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण के लिए अनेक योजनाएं चला रही है। शांतिवन का किचन सोलार ऊर्जा का अनोखा उदाहरण है, जहां 30 हजार लोगों का भोजन सौर ऊर्जा से बनाया जाता है। संस्था आध्यात्मिक ज्ञान के साथ सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में भी अनेक कार्यक्रम चला रही है। यह सब प्रैक्टिकल में देखने को मिल रहा है।

- राजयोगी बीके करुणा भाई, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

यहां से सभी को जीवन में प्रेरणा मिले

परमात्मा शिव बाबा के आशीर्वाद से आज यह सुंदर आयोजन हो रहा है। इसमें देश-विदेश से आए सभी महानुभावों का मैं भगवान के घर में हृदय से अभिनंदन करता हूं। यहां से आप सभी को जीवन में नई दिशा और प्रेरणा मिले, यही शुभ भावना है। समाज में उल्लेखनीय कार्य कर रहे लोगों को हर वर्ष तीन श्रेणियों में पुरस्कृत किया जाता है।

- डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, अतिरिक्त महासचिव , ब्रह्माकुमारीज़

इस ज्ञान से जिंदगी बदल जाती है

मेडिटेशन का कमाल है कि मेरे दिमाग में सदा सकारात्मक सोच ही रहती है। सेवा की भावना रहती है।
ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से लोगों की जिंदगी बदल जाती है।
राजयोग मेडिटेशन से कैसे जीवन बदलता है इसका मैं खुद साक्षी हूं। मेरे अंदर भी राजयोग से अनेक बदलाव आए हैं। संस्थान लोगों के कल्याण और जीवन परिवर्तन के लिए कार्य कर रही है।

-आनंद कार्की, प्रख्यात गायक, नेपाल

यहां आकर शांति की अनुभूति हुई

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सामाजिक कल्याण और उत्थान के लिए बहुत ही सराहनीय सेवाएं की जार ही हैं। यहां आकर बहुत ही शांति की अनुभूति हो रही है। आज सभी को अध्यात्म से जुड़ने की जरुरत है। ओम शांति मंत्र के उच्चारण से आत्मिक शांति मिलती है। शांति का यह अनुष्ठान ऐसे ही आगे बढ़ता रहे। लोगों का जीवन इसी तरह बदलता रहे।

- आरबी टिम्बापुर, आबकारी विभाग मंत्री, कर्नाटक सरकार

वैश्विक शिखर सम्मेलनः दूसरा दिन (शुभारंभ सत्र)

रामराज्य लाने के संकल्प के साथ सेवा कर रही है ब्रह्माकुमारीज़ः इंद्रेश कुमार, आरएसएस

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन शनिवार को एक स्थाई भविष्य की प्रेरणा विषय पर विद्वानों और वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी व रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने संबोधित किया। सम्मेलन में आरएसएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार, पंजाब सरकार के वित्तमंत्री हरपाल सिंह चीमा मुख्य रूप से रहे मौजूद।

ब्रह्माकुमारीज़ चरित्र निर्माण का काम कर रही है-

आरएसएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार ने अपने संबोधन के पूर्व संस्थान के महासचिव राजयोगी बृजमोहन भाई को याद करते हुए दी श्रद्धांजलि। इस दौरान उन्होंने कहा कि जब भी बोला गया जय भारत जय जगत बोला गया, कभी जय अमरीका जय अरब नहीं बोला गया। आज भी किसी में साहस नहीं है कि यहां से हिंदुस्तान शब्द हटा दे। हम कैसे भी हो गए लेकिन सारे जहां से अच्छे हम थे, हैं और रहेंगे। ज्ञान और चरित्र में बहुत बड़ा अंतर है। ज्ञान महान नहीं बनाता, चरित्र महान बनाता है। राम और रावण इसके उदाहरण हैं। रामत अपने चरित्र के कारण पूजे जाते हैं। रावण अपने चरित्र के कारण हर वर्ष जलाया जाता है। भारत में चरित्र पर ध्यान व जोर दिया जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ यही कार्य कर रही है। ब्रह्माकुमारीज़ चरित्र निर्माण का काम कर रही हैं। मां की सेवा करेंगे, मां को प्यार करेंगे तो कभी डॉक्टर के पास नहीं जाना पड़ेगा। मातृभूमि को प्यार करेंगे, जरूरत पड़ने पर बलिदान करेंगे तो स्वर्ग मिलेगा। मां हमें जोड़ती हैं, मातृभूमि भी हमें जोड़ती है। भारत भूमि सत्कर्म व सत्य आचरण की भूमि है। हमने भोगवाद के कारण सत्कर्म छोड़ दिया है।

भारत की बात दुनिया सुनने लग गई है-

इंद्रेश कुमार ने कहा कि इस ग्लोबल समिट से एक मिशन लेकर लोग जाएंगे तो नए भारत का उदय दिखाई देगा। एक दिया इस दीवाली पर नशामुक्त भारत के लिए जलाएं। एक दिया छुआछूत मुक्त भारत के लिए, एक दिया प्रदूषण मुक्त, एक दिया हिंसा मुक्त भारत के लिए जलाएं। एक दिया गरीबों के लिए जलाएं। हम सब अपने धर्म की पूजा पद्धति का पालन करें, लेकिन दूसरे धर्मों का अनादर नहीं करेंगे। भारत को विश्व गुरु के साथ विश्व मित्र बनाएं। भारत की बात दुनिया सुनने लग गई है। भारत ही एक देश है, चरित्र है, संस्कृति है, जिसे दुनिया के 27 देशों ने सम्मानित किया है। लोग कहेंगे यह नरेंद्र मोदी के कारण है, मैं कहूंगा यह भारत के कारण है। एक दिन आएगा जब भारत विश्व का नेतृत्व करेगा। कुछ लोग तब कहेंगे कि यही रामराज्य है। यही ब्रह्माकुमारीज़ का संकल्प है। इस संकल्प में हम ब्रह्माकुमारीज़ के साथ थे, हैं और रहेंगे।

वैश्विक शिखर सम्मेलन के शुभारंभ सत्र में संबोधित करते आरएसएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार।

संकल्प लें कि संवाद को युद्ध से ऊपर रखेंगे

पंजाब सरकार के वित्तमंत्री हरपाल सिंह चीमा ने कहा कि आज हम सभी एकता और विश्वास पर बात करने इकट्ठा हुए हैं। पूरी दुनिया आज आधुनिक तकनीकी विकास व आर्थिक विकास की तरफ बढ़ रही है। दूसरी तरफ, धर्म, नस्ल, सीमा विवाद के रुप में इंसान, इंसान से लड़ रहा है। आज जितना धन हथियारों पर खर्च हो रहा है, वही शिक्षा, पर्यावरण में लगाएं तो हमें शांति मिलेगी। विश्वास और संवाद के माध्यम से कई समस्याओं को सुलझा सकते हैं। जहां विश्वास है, वहां सहयोग है। हम आज संकल्प लें कि संवाद को युद्ध से ऊपर रखेंगे। मानवता को राजनीति से ऊपर रखेंगे।

विश्व के सभी लोग आत्मिक रूप से एक हैं

यहां हम सभी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा और दैवी गुणों की धारणा और सेवा भाव सीखते हैं। इससे मन के अंदर शांति, आनंद और सद्भाव होता है। सबसे पहले मन में स्वयं के प्रति विश्वास की भावना होना जरुरी है। विश्व की सभी आत्माओं के रचयिता एक परमपिता शिव परमात्मा हैं। हम सबकी रंग, रुप, देश, भाषा अलग-अलग जरुर है लेकिन हम सभी आत्मिक रुप से एक हैं। सभी आत्माओं का मूल गुण- शांति, प्रेम, पवित्रता है। जो भी रंग, भाषा की अनेकता है वह सिर्फ शरीर की है। एक परमात्मा का सत्य संदेश देने से लोगों में आपकी एकता और विश्वास बढ़ेगा। **- राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी,** मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

वसुधैव कुटुम्बकम को साकार कर रही है संस्था

मैं भी ब्रह्माकुमारीज़ का फ़ॉलोअर हूं। यह पवित्र स्थान है, जहां मन मिलते हैं और हृदय जुड़ते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ विश्व की सबसे बड़ी संस्था है, जो विश्व को, देशों को, परिवारों को, मनुष्यों को आपस में जोड़ती है। एकता और विश्वास के बिना स्थायित्व नहीं हो सकता है। संस्था सभी को एक साथ लाने के लिए कठोर परिश्रम कर रही है। वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा को साकार करने में ब्रह्माकुमारीज़ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मैं लगातार 15 वर्ष से निरंतर मुरली (भगवान के महावाक्य) सुनता हूं। मुरली महान दवा है जो ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा दी जा रही है। **- पीठाधिपति डॉ. निश्चलानंदनाथ महास्वामी,** विश्व ओक्कलिगा महासंस्थान मठ

मैं 30 साल से राजयोग मेडिटेशन कर रहा हूं और रोज मुरली सुनता हूं: विधायक

आन्ध्रप्रदेश विधानसभा के मुख्य सचेतक व विणुकोंडा से विधायक जीवी आंजनेयुलु ने कहा कि आज लोगों में आंतरिक शांति और वास्तविक खुशी गायब है। हम शांति और खुशी तभी पा सकते हैं, जब हम परिवार समाज को देंगे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान यही ज्ञान देता है। 30 वर्ष पहले मैंने शिवबाबा से आशीर्वाद प्राप्त किया। ब्रह्माकुमारीज़ के जरिए मैंने भगवान शिव का राजयोगा मेडिटेशन सीखा। इसने मुझे शांति व खुशी की प्राप्ति कराई। कई बार मुरली सुनते हुए मुझे लगा कि भगवान शिव मुझे व्यक्तिगत रुप से सिखाते हैं, बात करते हैं, गलती करने पर चेतावनी भी देते हैं।

वैश्विक शिखर सम्मेलनः दूसरा दिन (शाम का सत्र)

आर्थिक संपन्नता और व्यापार हमारा लक्ष्य नहीं है, हमारा लक्ष्य है वसुधैव कुटुम्बकम

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन प्लेनरी सेशन में अतिथि के रूप में केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री दुर्गादास उइके, मध्यप्रदेश के नगरीय विकास एवं आवास संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय मुख्य रूप से मौजूद रहे। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और पारस्परिक विश्वास के माध्यम से युद्ध की रोकथाम: शांति एवं सद्भाव के उत्प्रेरक के रूप में मीडिया विषय पर संबोधित करते हुए भारत सरकार के केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि मानवता के कल्याण के लिए ऐसे आयोजन बहुत जरूरी हैं। देश का आंतरिक स्वास्थ्य और विश्व का आंतरिक स्वास्थ्य इस समय ठीक नहीं है। दोनों ही स्थितियां ठीक नहीं हैं। आज का युद्ध केवल हथियारों का नहीं बल्कि विचारों, मतभेद और अविश्वास का युद्ध है। जब राष्ट्र समाज या व्यक्ति संवाद की जगह जहां संवाद, समन्वय और सामंजस्य स्थापित होना चाहिए वहां संदेह और स्वार्थ को प्राथमिकता देने की वजह से विविध प्रकार के युद्ध जन्म ले रहे हैं। युद्ध किसी का समाधान नहीं है।

ब्रह्माकुमारीज़ का सिद्धांत है हम बदलेंगे, जग बदलेगाः संतोष दीदी

संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने कहा कि आज जीवन के लिए सुख-सुविधाएं तेजी से बढ़ती जा रही हैं, उसी के अनुरुप में मनोविकार भी तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। युद्ध का मूल कारण ही मनोविकार हैं। यदि हमें विश्व में शांति स्थापित करना है तो मनोविकारों को दूर करते हुए मन में शांति स्थापित करना होगा। अध्यात्म और मेडिटेशन से मनोविकार दूर होते हैं। जितना हमारे अंदर आध्यात्मिकता आती जाती है, परमात्मा से हम योग के आधार पर शक्तियां लेते जाते हैं तो मन से नकारात्मकता दूर होती जाती है। हमारी भारत भूमि वह महान, श्रेष्ठ भूमि है जहां एक घाट पर शेर और बकरी पानी पीते थे। हम बदलेंगे, जग बदलेगा। यहां यही सिखाया जाता है कि अपने विचारों को बदलो, जीवन बदल जाएगा।

युद्ध का नाम आते ही सिहरन आ जाती है: मंत्री विजयवर्गीय

सम्मेलन के प्लेनरी सेशन में मप्र के नगरीय विकास एवं आवास संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि युद्ध का नाम आते ही सिहरन आ जाती है। हमने राम और रावण का युद्ध पढ़ा है। महाभारत में कौरव पांडव का युद्ध देखा है। कृष्ण ने कहा था दुर्योधन युद्ध से किसी का लाभ नहीं है। केवल पांच गांव दे दो, युद्ध टाल दो। युद्ध होने के कई कारण हैं। एक बार हम तय कर लें कि हम आपस मे भाई-भाई हैं तो शायद युद्ध लड़ने की जरुरत नहीं है। दुनिया आज विश्वयुद्ध के मुहाने पर खड़ी है। संयुक्त राष्ट्र संघ आज कठपुतली हो गया है। ताकतवर देशों के सामने बौना हो गया है। आज भारत की परंपरा पर विचार करने की जरुरत है। हम किसी को दुख देना नहीं चाहते। किसी को दुखी देखना नहीं चाहते हैं। तुर्किये पर जब संकट आया तो सबसे पहले मदद भेजने वाला देश भारत था। जबकि तुर्किये भारत विरोधी था, तब भी हमने इसकी परवाह नहीं की। 100 से ज्यादा देशों को वैक्सीन भेजने का काम भारत ने किया। पुतिन को पीएम मोदी ने कहा कि ये युद्ध का समय नहीं है, युद्ध से विनाश ही मिलता है। यदि विश्वयुद्ध होगा तो मानवता का क्या होगा? आर्थिक संपन्नता और व्यापार हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारा लक्ष्य वसुधैव कुटुम्बकम है। ब्रह्माकुमारीज़ इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इस संस्थान में पूर्णकालिक समर्पित बहनें हैं। विश्व में महिला सशक्तिकरण का कोई केंद्र है तो वह ब्रह्माकुमारीज़ है। ऐसे संगठन ही विश्व में युद्ध को रोक सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ में जितनी भी बहनें काम कर रही हैं, वह शक्तिपुंज हैं। यह भाईचारे, शांति, सद्भाव का संदेश दे रहीं हैं।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार-

विजयनगरम के सांसद अप्पलानैदु कालीसेट्टी, चीन शंघाई से आए अदानी समूह के चीन संचालन प्रमुख अक्षय माथुर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। जयपुर सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी ने राजयोग ध्यान से शांति की गहन अनुभूति कराई। स्वागत भाषण इंदौर ज़ोन (मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़) की प्रभारी राजयोगिनी बीके हेमलता दीदी ने दिया। संचालन शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक बीके सुमन दीदी ने किया। आभार मेडिकल विंग के सचिव बीके डॉ. बनारसी भाई ने माना।

ब्रह्माकुमारीज़ की प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का प्रैक्टिकल अभ्यास कराते हुए कहा कि रोज हम अभ्यास करें कि मेरी भृकुटी के अंदर मैं चमकता हुआ सितारा हूं। मैं आत्मा शांति स्वरुप हूं। मैं पवित्र आत्मा हूं। मैं दिव्य आत्मा हूं। पवित्रता की शक्ति मुझसे निकलते हुए इस हॉल में फैल रही है। इस हॉल में पवित्रता के वाइब्रेशन हैं। मैं चमकता हुआ सितारा, दिव्य आत्मा हूं। मुझसे निकलते हुए पवित्रता की शक्ति पूरे देश में फैल रही है। घर जाकर अब रोज यह अभ्यास करें। मेरे संकल्पों से सृष्टि बन रही है। मेरे संकल्पों से मेरे संस्कार बनता है। इसलिए एक-एक संकल्प सोच समझकर करें। शुभ और कल्याणकारी, पॉजीटिव संकल्प ही करें। इस विश्व को शांतिमय और भारत को रामराज्य बनाना मुझ आत्मा की जिम्मेदारी है।

वैश्विक शिखर सम्मेलनः समापन पत्र

संस्कार होगा तो विचार होगा, विचार से व्यवहार और व्यवहार होगा तो सरकार सही चलेगी: मंत्री निषाद

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, उप्र के मत्स्य पालन मंत्री डॉ. संजय निषाद, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष अंतर सिंह आर्य, जालौर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी रहे मौजूद

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन का समापन सत्र वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति का पुनरुद्धार विषय पर आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ के डेनमार्क की राष्ट्रीय समन्वयक बीके सोनिया ओहल्सन ने कहा कि भारत की गौरवशाली परंपरा पर हमें गर्व है। आज विदेशों में भी लोग तेजी से अध्यात्म के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। मेडिटेशन सीखने के लिए रुचि ले रहे हैं। भाजपा की जिला अध्यक्ष रक्षा भंडारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। स्वागत भाषण कृषि एवं ग्रामीण विकास प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी बीके सरला बहन ने दिया। जोनल मुख्यालय पांडव भवन दिल्ली की राजयोगिनी बीके पुष्पा दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन से शांति की गहन अनुभूति कराई। अमूल इंडस्ट्री के चैयरमेन अशोक चौधरी ने भी संबोधित किया। मप्र के उज्जैन के मालव लोक कला केंद्र के कलाकारों ने नृत्य की सुंदर प्रस्तुति से सभी दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। संचालन जयपुर की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके चंद्रकला बहन ने किया। मूल्य शिक्षा कार्यक्रम के निदेशक डॉ. बीके पांडियामणि भाई ने आभार माना।

वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति का पुनरुद्धार विषय के साथ सम्मेलन का समापन

समापन सत्र में संबोधित करते केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल व मंचासीन अतिथि।

ब्रह्माकुमारीज़ बहनें युवाओं को सही रास्ता दिखाने के कार्य में समर्पित हैं: अध्यक्ष

मप्र के बड़वानी से आए राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष अंतर सिंह आर्य ने कहा कि आज युवाओं के साथ संवाद करने की जरुरत है, ताकि वह सही रास्ते पर चलें। ब्रह्माकुमारीज़ की बहनें युवाओं को सही रास्ता दिखाने के कार्य में समर्पित रुप से सेवारत हैं। जालौर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ ने विविध कार्यों से सेवा की है। संस्थान की सेवाएं सराहनीय हैं। संस्थान सामाजिक कल्याण के लिए अनेक कार्यक्रम चला रही है। पीएम मोदी ने स्वदेशी अपनाने का नारा दिया है। हम स्वदेशी अपनाकर भारत को मजबूत बनाएं।

यहां से सभी को जीवन में प्रेरणा मिले

आधी आबादी जिसे मातृशक्ति के रुप में माना जाता है। लम्बे समय तक भारत आक्रमणकारियों के कब्जे में रहा। भारत सोने की चिड़िया, विश्वगुरु कहा जाता था, लेकिन गुलामी के दौर में महिलाओं के अधिकारों को कम कर दिया गया। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में महिलाएं ही प्रमुख हैं। संस्था के माध्यम से बहनों ने अपनी प्रतिभा, त्याग, समर्पण और सेवा को साबित किया है। मैं इसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। संस्कार होगा तो विचार होगा, विचार होगा तो व्यवहार होगा, व्यवहार होगा तो सरकार सही चलेगी। सबसे पहले हमें अपने विचारों को सकारात्मक बनाना होगा। यदि विचार अच्छे होंगे तो हर कार्य अच्छा होगा।

- डॉ. संजय निषाद, मत्स्य पालन मंत्री, उप्र सरकार

पुणे के सखी सूर संगम ग्रुप के 70 कलाकारों ने एक स्वर में प्रस्तुति देकर मन मोहा

सम्मेलन में अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर शांतिवन के डायमंड हॉल में लगाई गई एक्सपो का उद्घाटन किया। इसमें संस्थान की सेवाओं को दर्शाया गया था।

सम्मेलन में कलाकारों ने बांधा समां-

वैश्विक शिखर सम्मेलन में आकार कथक डांस ग्रुप पुणे, मालव लोक कला केंद्र उज्जैन मप्र और आंध्रप्रदेश के तड़ीपत्री वंदना डांस अकादमी के कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर सम्मेलन में समां बांध दिया। हर कोई प्रस्तुति देखकर दंग रह गया है। कलाकारों ने अद्भुत कौशल और अभिनव कला से अपनी अमिट छाप छोड़ी। सांस्कृतिक संध्या में लोक संस्कृति से लेकर देशभक्ति की प्रस्तुति दी।

संपादकीय

संस्कारवान पीढ़ी- राष्ट्र की सच्ची संपत्ति

हर वर्ष 14 नवम्बर को भारत में बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। हर बच्चा केवल भविष्य का नागरिक नहीं, बल्कि वर्तमान का शिक्षक भी है। उसका मन निर्मल, कोमल और ग्रहणशील होता है। इसलिए बचपन में जो संस्कार दिए जाते हैं, वही आगे जीवन की दिशा तय करते हैं। बच्चे को केवल ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों का अनुभव देने की जरूरत है। सच्ची शिक्षा वही है जो जीवन को सुंदर बनाए और दूसरों के जीवन में भी प्रकाश फैलाए। आज शिक्षा ज्ञान दे रही है, परंतु दिशा नहीं। बच्चों को विज्ञान तो सिखाया जा रहा है, पर विवेक नहीं। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ का "वैल्यू एजुकेशन एंड कैरेक्टर बिल्डिंग" अभियान बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन और सकारात्मक सोच का संचार कर रहा है। संस्था का संदेश है- "शिक्षा वही जो जीवन का निर्माण करे, केवल रोजगार न दे।" सच्ची शिक्षा के तीन आधार स्तंभ हैं - स्व-अनुशासन : विचार, वाणी और व्यवहार में संयम। सकारात्मक दृष्टिकोण : हर परिस्थिति में अच्छाई देखना। सेवा भावना : दूसरों की सहायता में आनंद अनुभव करना। प्रत्येक बच्चा आत्मा है - शांति, प्रेम और पवित्रता उसका मूल स्वभाव है। जब बच्चे को यह आत्मबोध कराया जाता है कि "मैं आत्मा हूँ, यह शरीर मेरा साधन है", तो उसमें आत्म-सम्मान, करुणा और सहिष्णुता स्वतः विकसित होती है। मेरा लक्ष्य केवल सफलता नहीं, बल्कि श्रेष्ठता है। क्योंकि सफलता अस्थायी होती है, जबकि श्रेष्ठता स्थायी मूल्य छोड़ती है। परिवार बच्चे का पहला विद्यालय है और माता-पिता उसके प्रथम शिक्षक। यदि परिवार में प्रेम, सत्य और सहयोग का वातावरण हो, तो वही भाव बच्चे के आचरण में उतरते हैं। बच्चे वही बनते हैं जो वे देखते हैं, न कि जो वे सुनते हैं। इसलिए माता-पिता और शिक्षक अपने व्यवहार से वह उदाहरण बनें, जिसे देखकर बच्चा प्रेरित हो।

बोध कथा/जीवन की सीख

दीपक और अंधकार

एक छोटे से गाँव में एक युवक रहता था — नाम था अर्जुन। वह बहुत बुद्धिमान था, परंतु उसका स्वभाव चिड़चिड़ा और घमंडी था। उसे लगता था कि दुनिया में जो कुछ भी है, वह केवल उसकी मेहनत और बुद्धि के कारण है। एक दिन वह गाँव के एक वृद्ध साधु के पास पहुँचा और बोला- "बाबा, मुझे बताइए, दुनिया में सबसे बड़ा कौन है? ज्ञान, धन या मैं?"

साधु मुस्कराए और बोले, "इस प्रश्न का उत्तर तुम्हें खुद ढूँढना होगा। रात को मेरे साथ नदी के किनारे चलना।"

रात हुई। चारों ओर घना अंधेरा था। साधु ने एक छोटा-सा दीपक जलाया और बोले, "चलो।" अर्जुन बोला, "बाबा, इतने छोटे दीपक से हम कहाँ तक देख पाएँगे?" साधु शांत स्वर में बोले, "जितना यह दीपक दिखाता है, उतना चलो। आगे का मार्ग स्वयं प्रकाशित होता जाएगा।" वे चलते रहे। धीरे-धीरे अंधकार छँटता गया और अर्जुन को एहसास हुआ कि दीपक की छोटी लौ भी विशाल अंधकार को काट सकती है। तभी साधु बोले- "बेटा, जीवन भी ऐसा ही है। हम सब अपने-अपने भीतर एक दीपक लेकर जन्म लेते हैं- वह है आत्मा का प्रकाश। जब हम अहंकार, लोभ और क्रोध से उसे ढक देते हैं, तो जीवन अंधकारमय हो जाता है। पर जब उस दीपक को ज्ञान, सत्य, प्रेम और परमात्म-स्मृति के तेल से भरते हैं, तो जीवन का हर मार्ग स्पष्ट हो जाता है।"

अर्जुन ने गहराई से सिर झुका लिया। उसने समझ लिया कि बाहरी सफलता नहीं, बल्कि आत्मिक प्रकाश और ईश्वरीय जुड़ाव ही सच्चा मार्गदर्शन देता है। उसने प्रण किया कि अब वह हर काम में ईमानदारी, शांति और नम्रता का दीप जलाएगा। कुछ समय बाद वही अर्जुन गाँव का सबसे प्रिय व्यक्ति बन गया, क्योंकि उसके व्यवहार से लोगों के मन का अंधकार मिटने लगा था और हर हृदय में आशा की लौ जलने लगी थी।

संदेश: जो व्यक्ति अपने भीतर के दीपक को प्रज्वलित रखता है, वही दूसरों के जीवन में प्रकाश फैला सकता है। बाहरी दौलत या प्रसिद्धि नहीं, बल्कि आत्मज्ञान, विनम्रता, करुणा, परमात्मा से जुड़ाव और सत्कर्म की भावना ही जीवन को सच्चा उजाला देती हैं। जब हम अपने जीवन को दूसरों के कल्याण से जोड़ते हैं, तभी सच्ची सफलता और शांति का अनुभव होता है।

मेरी कलम से

बीके सोनिया बहन (41), फैशन डिज़ाइनर, ऑउटलेट ऑनर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

अध्यात्म हमें अपनी पावर को सही डायरेक्शन में यूज करना सिखाता है

राजयोग से व्यक्तिगत और पेशवर जीवन में मिली सफलता

मैं अक्टूबर 2009 में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आई। तब से लेकर नियमित रूप से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रही हूं। जब इस ज्ञान को समझा और जाना कि परमात्मा निराकार हैं, हम उनकी संतान हैं। परमात्मा हमारे मात-पिता, बंधु, सखा और सबकुछ हैं। यही बात मुझे सबसे अच्छी लगी। राजयोग के अभ्यास से धीरे-धीरे मेरा जीवन बदल गया। मेरा अनुभव है कि राजयोग से हमारे जीवन में सामान्य रूप से परिवर्तन आते हैं, हमें महसूस ही नहीं होता है। राजयोग से हम परमात्मा की मदद लेना सीख जाते हैं। परमात्मा को याद करना, उनके साथ कनेक्ट करना कितना इजी है। जब से मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी हूं, तभी से अपना बुटिक का बिजनेस भी शुरू किया है। परमात्मा की मदद से इसमें भी बहुत सफलता मिल रही है। बाबा के दिए इस जीवन को सही दिशा में लोक कल्याण के कार्य में यूज कर रही हूं।

मेरा मानना है कि हमारे जीवन में कितना भी ज्ञान क्यों न हो, लोग हमारे व्यवहार से ही प्रभावित होते हैं। राजयोग के ज्ञान से व्यवहार में नम्रता, विनम्रता, सच्चाई और सफाई आई, जिससे ग्राहकों को मैनेज करना आसान हो गया। आप यदि अध्यात्म पथ के राही हैं- ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी हैं और घर में रहते हैं या समर्पित रूप से सेवाकेंद्र पर रहते हैं सभी के लिए अपना जीवन गुणवान, आदर्शवान, मूल्यवान बनाना जरूरी है। अध्यात्म कहता है कि जीवन में आगे बढ़ो, बाहर निकलो, सीखो और समाज बदलाव में अपना योगदान करो। इसी मंत्र को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया है।

जब मैंने पवित्रता के मार्ग पर चलने और ब्रह्मचर्य व्रत का निर्णय लिया तो परिवार की तरफ से कई तरह के दबाव आए। लेकिन मैं अपने निर्णय पर अडिग रही और सभी समस्याओं का राजयोग की शक्ति, परमात्मा की मदद और आत्मबल से सामना किया। जब हम ब्रह्ममुहूर्त में अमृतवेला करते हैं तो इससे परमात्मा की मदद मिलती है। जीवन में आने वाली समस्याएं सहज लगने लगती हैं। जब हमारे जीवन में ज्ञान अंदर आता है तो हम अंदर से भरपूर महसूस होते जाते हैं।

मेरा युवाओं को यही संदेश है कि घर से निकलो। मेहनत करो। कुछ काम करो। अध्यात्म से अपनी पावर को सही डायरेक्शन में यूज करो। काबिल बनो। कहीं भी रहो लेकिन अपने आप को काबिल बनाओ। परमात्मा हम बच्चों का आह्वान करते हैं कि मेरे बच्चे तुम मेरी राह पर चलो, मैं तुम्हें जन्मोंजन्म के लिए भाग्य बना दूंगा। हमें अपनी लाइफ में बैलेंस होकर चलना चाहिए। राजयोग के अभ्यास से लाइफ इजी हो जाती है। हम विनम्र हो जाते हैं तो लोगों से हमारा टकराव नहीं होता है। जब हम शिव बाबा को सच्चे दिल से याद करते हैं तो वह हर जगह हमारी मदद करते हैं। इसके अलावा में रनिंग में भी समय प्रति समय भाग लेती हूं। जीवन में उमंग-उत्साह बनाए रखने के लिए हमें कुछ अच्छे शौक भी करना चाहिए। ताकि आप क्रिएटिव बने रहें। मैं अपने जीवन से बहुत खुश हूं। आत्मनिर्भर हूं और अपनी जिंदगी अपने तरीके से जी रही हूं। परमात्मा के साथ और मदद से यह जीवन खुशनुमा, आनंदमय बन गया है।

आत्मिक स्वरूप में एकाग्रचित्त द्वारा ध्यान-धारणा

जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 88

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबूरोड। मन, बुद्धि एवं संस्कार का पवित्र स्वरूप निर्मित करने हेतु आध्यात्मिक शक्ति की सुखद अनुभूति का समग्र परिदृश्य मददगार बनकर आत्म चेतना को परिष्कृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिससे आत्मिक शक्ति की स्थितियां निरंतर अभिवृद्धि को प्राप्त होते हुए वैभव सम्पन्नता के स्वरुप में परिवर्तित हो जाती हैं। परमसत्ता की पारलौकिक शक्ति का अनुभूतिगत स्वरुप आत्मा को शक्तिशाली बना देता है, जिससे जीवात्मा सदाकाल के लिए नियम-संयम, जप-तप, ध्यान-धारणा के अनुसरण एवं अनुकरण की प्रक्रिया में पूर्णतः समर्पित हो जाती है। आत्मिक स्वमान, स्वरूप एवं स्वभाव की वास्तविकता जीवन को सर्व गुणों एवं शक्तियों से अनुभवी बना देती है, जिसमें आत्मा उच्चतम स्वरूप में स्वयं को स्थापित करके सदैव स्वाध्याय के द्वारा सत्य के सानिध्य में गतिशील बनी रहती है।

साक्षात्कारमूर्त स्थिति से आत्मिक स्वरूप: आत्मिक स्वरूप की अनुभूति हेतु जीवात्मा तीव्र पुरुषार्थ के प्रति निष्ठावान रहती है जिससे आधारमूर्त, उद्धारमूर्त, अनुभवीमूर्त, उदाहरणमूर्त एवं साक्षात्कारमूर्त स्थिति के गुणानुक्रम में गतिशील होते हुए स्वयं को विधिवत रूप से पहुंचाना संभव हो जाता है। मानव जीवन की उपलब्धि से आत्महित के प्रति सदा, स्वयं को आत्मिक संस्कार से परिपूर्ण करके चेतना के परिष्कार को सुनिश्चित किया जाता है जिससे आत्मगत संबंध एवं संपर्क में आने वाली सर्व मानव आत्माओं को साक्षात्कारमूर्त स्थिति का सहज ही अनुभव होने लगता है। आत्मिक स्वरूप की स्थिरता से सम्बद्ध विशिष्ट पक्ष एकाग्रचित्त के साथ, ध्यान एवं धारणा की उच्चतम अवस्था होती है जिसमें नैसर्गिक स्थिति का निर्माण हो जाने से साक्षात्कारमूर्त बन जाने का मानवीय भाव और विचार जगत, संतुष्टता की अनुभूति से सदा अनुप्राणित होता रहता है। साधक एवं साध्य की पूरकता सदा एक-दूसरे के सानिध्य को विभिन्न स्थितियों में भी बनाए रखती है, जिससे साधना का पथ अत्यधिक सुगम हो जाता है और आत्मगत निर्धारित मानदंड लक्ष्य और लक्षण के अन्र्तसम्बन्धों को विकसित करते हुए सहभागी भूमिका में अपना योगदान निरूपित करने लगते हैं। आत्मा का वास्तविक स्वमान, स्वरुप एवं स्वभाव सदैव ही नैसर्गिक रहने के कारण आत्मिक स्मृति और अवस्था को आध्यात्मिक पुरुषार्थ द्वारा जीवात्मा अपने ही स्वरुप को आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति की अनवरत प्रक्रिया से अनुप्राणित होते हुए साक्षात्कारमूर्त बन जाती है।

आत्म दर्शन हेतु एकाग्रचित्त अवस्था: स्व-दर्शन की प्रक्रिया में आत्मिक चिंतन का निरंतर अभ्यास और जीवात्मा द्वारा प्राप्त की जाने वाली आत्मानुभूति ही आत्म हित का कल्याणकारी मार्ग है जिसके लिए सम्पूर्ण जीवन काल में चित्त की एकाग्रता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। आत्मिक स्वरूप में सदा स्थित रहकर ही परमात्मा से सम्पूर्ण सम्बन्धों की स्थापना की जा सकती है जिससे व्यावहारिक जगत में आत्मगत परिष्कार की परिणिति सुनिश्चित हो जाती है। जीवन के वृहद् स्वरूप में मानवीय मूल्यगत श्रेष्ठतम गुणों एवं शक्तियों की उपयोगिता सभी प्रकार की स्थितियों में होती है जिसके प्रति संवेदनशील दृष्टि और दृष्टिकोण विकसित करते हुए होते आत्मा की एकाग्र चित्त अवस्था, ध्यान तथा धारणात्मक पवित्रता का प्रमुख आधारभूत कारण बन जाती है। आत्मा के मूलभूत नैसर्गिक स्वभाव को संपूर्ण रूप से आत्मसात करने पर ही जीवात्मा-नियम एवं संयम के साथ जप और तप को सम्पूर्ण ध्यान तथा धारणा के अनुष्ठान द्वारा व्यावहारिक जीवन में विधिवत रूप से क्रियान्वित करने में सक्षम हो पाती है। मनुष्य जीवन का सौभाग्यशाली स्वरुप आत्मानंद की प्राप्ति में ही सुनिश्चित होता है जिसके लिए जीवात्मा स्वयं के सानिध्य को आत्म दर्शन के माध्यम से आत्मिक स्वरुप में स्थायित्व की अनुभूति हेतु चित्त को पूर्ण रूपेण एकाग्र करके परमसत्ता के सम्मुख सहज रूप से समर्पित कर देती है।

परमात्म अनुभूति में ध्यान धारणा स्थिति

जीवन के व्यावहारिक स्वरूप में चेतना के माध्यम से तीव्र पुरुषार्थ की गतिशीलता आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रस्फुटित होती है जो चेतना के ध्यान एवं धारणा का परिणाम है जिसका मूलभूत ध्येय- आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति की ओर स्वयं को अग्रसर करना होता है। चेतना की चैतन्यता को स्व-कल्याण से सर्व मानव आत्माओं के कल्याणकारी स्वरुप तक पहुंचाने में आत्म तत्व के साथ परमसत्ता की स्वीकारोक्ति आवश्यक है क्योंकि आत्म जागृति द्वारा आत्मिक परिवेश में व्याप्त गुण एवं शक्ति से परिचित होने की स्थिति का ध्यान, पूर्णतः धारणा में रूपान्तरित हो जाने के लिए परमात्म शक्ति की अनुभूति का महत्वपूर्ण स्रोत है। मन, बुद्धि एवं संस्कार का पवित्र स्वरूप निर्मित करने हेतु आध्यात्मिक शक्ति की सुखद अनुभूति का समग्र परिदृश्य मददगार बनकर आत्म चेतना को परिष्कृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिससे आत्मिक शक्ति की स्थितियां निरंतर अभिवृद्धि को प्राप्त होते हुए वैभव सम्पन्नता के स्वरुप में परिवर्तित हो जाती है।

"नाम सिमरन के द्वारा मन शांत होता है और आत्मा शुद्ध बनती है। यह ध्यान का मार्ग व्यक्ति को ईश्वर से जोड़ता है।"

- गुरुनानक देव जी, सिख धर्म

"जीवन की सच्ची लय तब बनती है, जब मन ईश्वर की ताल में गाता है। प्रभु का स्मरण ही सच्चा सहारा है"

- कनक दास, प्रसिद्ध संत, कर्नाटक

ब्रह्माकुमारीज़ में प्रतिभाओं का सम्मान

मीडिया, व्यापार और सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य पर तीन श्रेणियों में किया सम्मानित

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी तीन श्रेणियों में दिग्गज हस्तियों को सम्मानित किया गया। संस्थान की ओर से अलग-अलग क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रहे लोगों को राष्ट्र चेतना पुरस्कार, मानव के संरक्षक पुरस्कार और ज्वेल ऑफ इंडिया पुरस्कार से शील्ड, प्रशस्ति पत्र और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

ब्रह्माकुमारीज मानवता के संरक्षक पुरस्कार

इस श्रेणी के तहत ऐसे लोगों को पुरस्कृत किया जाता है जो दुनिया में एकता, शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहे हैं। जिन्होंने क्षेत्रीय संघर्षों को रोकने में अपना सराहनीय योगदान दिया है।

ब्रह्माकुमारीज राष्ट्र चेतना पुरस्कार

पत्रकारिता के क्षेत्र में उच्च आदर्शों, देशप्रेम की भावना, समाज कल्याण, सत्य, साहस के साथ पत्रकारिता कर देशभर में नाम कमाने वाले वरिष्ठ पत्रकार को इस श्रेणी में पुरस्कृत किया जाता है।

ब्रह्माकुमारीज ज्वेल ऑफ इंडिया अवार्ड

अपनी लगन और हिम्मत से उद्योग के क्षेत्र में नवाचार कर देश-दुनिया में नाम रोशन करने वाले व्यापारियों, उद्यमियों को इस श्रेणी के तहत पुरस्कृत किया गया। इसका मकसद उद्यमिता के प्रति बढ़ावा देना है।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर सम्मान

मप्र के सागर के प्राकृतिक खेती प्रशिक्षक एवं सामाजिक सुधारक आकाश चौरासिया को उनके द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना के लिए गार्डियन ऑफ ह्यूमैनिटी अवार्ड से सम्मानित किया गया। वह बोले- प्राकृतिक खेती समय की मांग है।

पत्रिका के प्रधान संपादक को राष्ट्र चेतना अवार्ड

राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी को सकारात्मक और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी पत्रकारिता के लिए राष्ट्र चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनकी ओर से पुत्रवधु दीप्ति कोठारी ने ग्रहण किया।

अवार्ड पाकर अभिभूत हूं: अरुण जैन

इंटलेक्ट डिजाइन अरेना लिमिटेड के सीएमडी अरुण जैन को ज्वेल ऑफ भारत अवार्ड से सम्मानित किया गया। उनकी धर्मपत्नी मंजू जैन भी मौजूद रहीं। उन्होंने कहा कि लाखों लोग साथ में कैसे कार्य करते हैं, यही देखने में आया था। अवार्ड पाकर अभिभूत हूँ।

किसानों को जैविक खेती से जोड़ना होगा

केरला के महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी के प्राकृतिक खेती के व्याख्याता केवी दयाल ने कहा कि आज देश में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है। हमें सुरक्षित भविष्य के लिए किसानों को जैविक खेती से जोड़ना होगा। मैं अपने विद्यार्थियों को इस बात पर फोकस करता हूं।

दैनिक भास्कर के नेशनल एडिटर सम्मानित

पत्रकारिता के माध्यम से समाज में सकारात्मकता को बढ़ावा देने, अपने समाचार पत्र में प्रत्येक सोमवार को नो नेगेटिव न्यूज चलाने पर दैनिक भास्कर समूह के नेशनल एडिटर ओम गौड़ को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राजयोग मेडिटेशन से बदल गया मेरा जीवन

सीबीआई व राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के पूर्व निदेशक पद्मश्री डीआर कार्तिकेयन को ज्वैल ऑफ भारत अवार्ड से नवाजा गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मैं भी कई वर्ष से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। इससे जीवन पूरी तरह बदल जाता है।

संस्था नारी सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रही

गुजरात के राष्ट्रीय कामधेनु आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. वल्लभभाई कथीरिया को मानवता के संरक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ पर्यावरण संरक्षण से लेकर सामाजिक कल्याण, नारी सशक्तिकरण के लिए संस्था कार्य कर रही है।

सम्मेलन में एंकर मीनाक्षी जोशी सम्मानित

दिल्ली से आईं वरिष्ठ संपादक एवं एंकर मीनाक्षी जोशी को भी सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज स्वयं को ईश्वर से जोड़ने का काम कर रही है। सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए सस्टेनेबल माइंड व बॉडी का होना जरुरी है।

अमिताभ को मानवता के संरक्षक पुरस्कार

समाजसेवा व मानव कल्याण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य पर युवा अनस्टॉपेबल के संस्थापक एवं मुख्य प्रेरणा अधिकारी अमिताभ शाह को मानवता के संरक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा राजयोग ध्यान से मेरा जीवन बदल गया।

ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव राजयोगी बृजमोहन भाई का महाप्रयाण

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल और मुख्यमंत्रियों ने दुख जताते हुए शोक संवेदनाएं व्यक्त की

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के महासचिव 92 वर्षीय राजयोगी बृजमोहन भाई नहीं रहे। उन्होंने गुरुवार को दिल्ली मानेसर के एक निजी हॉस्पिटल में इलाज के दौरान सुबह 10.25 बजे अंतिम सांस ली। वह पिछले एक वर्ष से बीमार चल रहे थे। पहले उनका इलाज माउंट आबू स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल और फिर अहमदाबाद में चल रहा था। उनकी पार्थिव देह को 9 और 10 अक्टूबर को गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में दर्शनार्थ रखा गया है। वहीं 12 अक्टूबर को आबूरोड मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार होगा। एक वर्ष पूर्व राजयोगी निर्वैर भाई के निधन के बाद आपको महासचिव नियुक्त किया गया था। इसके पहले आप अतिरिक्त महासचिव के रूप में सेवाएं दे रहे थे। वर्तमान में आप संस्थान के मुख्य प्रवक्ता और राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी थे।

7 जनवरी 1934 को पंजाब के अमृतसर में जन्मे राजयोगी बृजमोहन भाई ने दिल्ली विश्वविद्यालय से वर्ष 1953 में वाणिज्य (ऑनर्स) में स्नातक किया। यहीं से वर्ष 1955 में कानून (एलएलबी) की डिग्री प्राप्त की। वहीं वर्ष 1956 से आप चार्टर्ड एकाउंटेंट के रूप में मान्यता प्राप्त हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की सहयोगी संस्था राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान फाउंडेशन के आप सचिव थे और ब्रह्माकुमारीज़ की एपेक्स कमेटी (उच्च समिति) के सदस्य थे। साथ ही एकाउंट विभाग के आप प्रमुख थे। आप एक कुशल आध्यात्मिक वक्ता और गीता ज्ञान विशेषज्ञ थे।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन में राजयोगी बीके बृजमोहन भाई को श्रद्धांजली देते हुए बिहार के राज्यपाल मोहम्मद आरिफ खान ने कहा कि उनका जाना ना केवल ब्रह्माकुमारीज़ की क्षति है, बल्कि अध्यात्म जगत की बड़ी क्षति हुई है। वे प्रखर वक्ता थे। उनका जीवन लोगों की कल्याण में समर्पित था।

22 वर्ष की उम्र में 1956 में पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आए थे भाईजी

1973 में वित्त प्रबंधक के पद से इस्तीफा देकर पूर्ण रूप से जुड़ गए-

राजयोगी बृजमोहन भाई की बचपन से ही अध्यात्म में रुचि थी। उन्होंने अपने जीवन में अनेक धर्म-ग्रंथों का पठन-पाठन किया। 22 वर्ष की उम्र में वर्ष 1955 में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आने के बाद आपके जीवन की दिशा ही बदल गई। यहां राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद आपने ब्रह्मचर्य व्रत लेते हुए विश्व सेवा का संकल्प किया। कुछ समय तक आप संस्था से जुड़े रहते हुए जॉब करते रहे। भारत सरकार के फर्टिलाइज़र कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया में 17 वर्ष तक सेवाएं देने के बाद आप वर्ष 1973 में वित्त प्रबंधक के पद से इस्तीफा देकर संस्था में पूर्ण रुप से जुड़ गए।

विश्वभर में अनेक सम्मेलनों में लिया भाग-

आपने विश्वभर में आयोजित होने वाले अनेक सभा, सम्मेलनों में भाग लिया और मुख्य वक्ता के रुप में जन-जन को आध्यात्मिक ज्ञान से रुबरु कराया। संयुक्त राष्ट्र न्यूयॉर्क में आयोजित सम्मेलनों में ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से प्रतिनिधित्व भी किया। साथ ही रुस, अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, केन्या, दक्षिण-पूर्व एशिया एवं कैरेबियन देशों का दौरा कर लोगों को भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का संदेश दिया।

गीता ज्ञान में थी विशेष रुचि-

आपको बचपन से ही पढ़ने-लिखने का शौक रहा। इसके चलते आपकी श्रीमद् भागवत गीता के पठन-पाठन में विशेष रुचि रही। आपने बहुत ही गहराई से गीता का अध्ययन किया। आपके ज्यादातर कार्यक्रम गीता ज्ञान पर आधारित होते थे। आपका मानना था कि श्रीमद् भागवत गीता में जीवन का सार समाया हुआ है। इसका ज्ञान जन-जन तक पहुंचाने से ही लोगों में आत्मिक जागृति और आध्यात्मिकता के प्रति लगन पैदा होगी। इसके अलावा आप गहन आध्यात्मिक सत्यों को हास्य और बुद्धिमत्ता के साथ सरल रुप में प्रस्तुत करने के लिए प्रसिद्ध थे।

ग्लोबल समिट में पधारीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का सम्मान करते महासचिव राजयोगी बीके बृजमोहन भाईजी व अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. मृत्युंजय भाई। **(फाइल फोटो)**

पीएम आवास में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को परमात्म रक्षासूत्र बांधने के दौरान महासचिव राजयोगी बृजमोहन भाई व ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी।

राष्ट्रपति का शोक संदेश

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने गहरा शोक जताते हुए अपने संदेश में लिखा है कि बीके बृजमोहन भाईसाहब आध्यात्मिक ज्ञान और विनम्रता के प्रतीक थे। उनकी निःस्वार्थ सेवाओं ने अनगिनत जीवनों को स्पर्श किया। मानव मूल्यों और शांति को बढ़ावा देने की उनकी विरासत लोगों को पवित्रता और सत्य के मार्ग पर निरंतर प्रेरित करती रहेगी।

प्रधानमंत्री का शोक संदेश

राजयोगी बीके बृजमोहन भाई जी के निधन का समाचार सुनकर अत्यंत दुःख हुआ। उनका देहावसान ब्रह्माकुमारी संस्थान के साथ-साथ उन सभी के लिए गहरी क्षति है, जिनके जीवन को उनकी करुणा, ज्ञान और मार्गदर्शन ने स्पर्श किया। अपनी प्रेरणादायक शिक्षाओं, शांत स्वभाव और आदर्श आचरण के माध्यम से राजयोगी बृजमोहन भाई ने शांति, सद्भाव और विश्व बंधुत्व का संदेश व्यापक रुप से फैलाने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके अमूल्य कार्यों ने संस्था की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आत्मिक उत्थान के लिए उनके प्रयास सदा प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

भाजपा अध्यक्ष का शोक संदेश

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व केंद्रीय कैबिनेट मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने अपने संदेश में लिखा कि मुझे यह जानकर अति दुःख हुआ है कि भ्राता श्री ब्रजमोहन जी जो ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के महासचिव थे, उनका देहांत हो गया है। वे 22 वर्ष की आयु में ही संस्था से जुड़ गए थे और 92 वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर निरंतर आध्यात्मिक सेवा में लगे रहे। वे सदैव हर्षित मुख, अथक सेवाधारी और समाज सेवा के प्रतीक रहे। मैं ऐसी महान आत्मा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

सेवा भावना प्रेरणा देती रहेगी

कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गेहलोत ने अपने संदेश में कहा कि राजयोगी बीके बृजमोहन जी का निधन वैश्विक आध्यात्मिक समुदाय के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उन्होंने राजयोग ध्यान के माध्यम से असंख्य व्यक्तियों को आत्म जागरण एवं जीवन रुपांतरण की दिशा में प्रेरित किया। उनकी सादगी, सेवा भावना और निष्ठा युगों-युगों तक प्रेरणा देती रहेगी।

भारतीय संस्कृति के प्रखर प्रवक्ता

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने संदेश में कहा कि राजयोगी बृजमोहन भाईजी का जीवन आध्यात्मिक चेतना, नैतिक मूल्यों और विश्व कल्याण के लिए समर्पित रहा। गीता ज्ञान के ज्ञाता एवं भारतीय संस्कृति के प्रखर प्रवक्ता के रुप में आपने देश-विदेश में भारत की वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को जीवंत किया। आपका देहावसान समाज और अध्यात्म दोनों ही क्षेत्रों की अपूरणीय क्षति है। बाबा महाकाल से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को परमपिता परमात्मा के चरणों में स्थान मिले।

संस्था के विस्तार में रहा योगदान

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अपने संदेश में लिखा कि राजयोगी बीके बृजमोहन जी ब्रह्माकुमारीज़ की आध्यात्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के प्रमुख स्तंभ थे। उन्होंने संस्था के संगठन, विस्तार और जनसेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ओम् शांति रिट्रीट सेंटर, गुरुग्राम की स्थापना में भी आपका उल्लेखनीय योगदान रहा। उनका निधन आध्यात्मिक जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

अनंत यात्रा पर... राजयोगिनी अवधेश दीदी

राज्यपाल, मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, उपमुख्यमंत्री से लेकर हजारों लोगों ने दी श्रद्धांजली

मप्र के राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने राजयोग भवन पहुंचकर अवधेश दीदी को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राजयोग भवन पहुंचकर श्रद्धांजली अर्पित की।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राजयोग भवन पहुंचकर श्रद्धांजली दी।

शिव आमंत्रण, भोपाल, मप्र।

मप्र में ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा अध्यात्म का बीजारोपण करने वाली, भोपाल जोन की संस्थापक 75 वर्षीय राजयोगिनी अवधेश दीदी का देवलोकगमन हो गया। उन्होंने 19 सितंबर को बंसल हॉस्पिटल भोपाल में इलाज के दौरान दोपहर 12.15 बजे अंतिम सांस ली। पिछले एक साल से स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। 20 सितंबर को सुभाष नगर स्थित मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार किया गया। दीदी के देवलोकगमन पर जोनल मुख्यालय राजयोग भवन पहुंचकर राज्यपाल मंगूभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला, विधानसभा के प्रमुख सचिव अवधेश प्रताप सिंह सहित हजारों लोगों ने श्रद्धांजली अर्पित कर उनके सेवा कार्यों को याद किया। वहीं 30 सितंबर को रवींद्र भवन में श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। इसमें पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, मप्र के कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग, भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल सहित प्रदेशभर से आए बीके भाई-बहनों ने पुष्पांजली अर्पित की।

उप्र आगरा के शमसाबाद में हुआ था जन्म-

जन्म 16 अगस्त 1950 में उप्र के आगरा के शमसाबाद में जन्मी राजयोगिनी अवधेश दीदी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार थे। उनकी भगवान में अटूट आस्था, श्रद्धा और विश्वास देख माता-पिता ने सोच लिया था कि यह बच्ची साध्वी बनेगी। आपकी बचपन से ही समाजसेवा और देशप्रेम में रुचि रही। अध्यात्म के प्रति अटूट लगन के चलते उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाज कल्याण, समाजसेवा और विश्व कल्याण के कार्य में अर्पित कर दिया। वर्ष 2010 में आपको किरण लाइफ टाइम सम्मान से सम्मानित किया गया, जो कि एक राष्ट्रीय महिला उत्कृष्ट पुरस्कार है।

बाबा से मिलने के बाद बदला जीवन-

वर्ष 1965 में आप आगरा में पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आईं। इसके बाद संस्थान के नियमित विद्यार्थी के रूप में राजयोग की पढ़ाई शुरू कर दी। प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती से आप खासी प्रभावित रहीं। वर्ष 1968 में पहली बार माउंट आबू में ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक ब्रह्मा बाबा से मिलीं। बाबा के तपस्वी और प्रेरक जीवन से इतनी प्रभावित हुईं कि उसी क्षण ब्रह्मचर्य का व्रत का संकल्प लेते हुए आजीवन अध्यात्म के मार्ग पर चलने का संकल्प ले लिया। इसके बाद वह ब्रह्मा बाबा के निर्देशानुसार भोपाल पहुंचीं जहां से पूरे प्रदेश में अध्यात्म का संदेश पहुंचाया।

500 ब्रह्माकुमारी बनीं, 300 सेवाकेंद्र खोले-

अवधेश दीदी की ममतामयी पालना, अथक मेहनत, लगन और परिश्रम का कमाल है कि आपने मप्र और उप्र के विभिन्न जिलों में 300 से अधिक सेवाकेंद्रों की स्थापना की। इन सेवाकेंद्रों के माध्यम से एक लाख से अधिक लोग अध्यात्म के पथ पर चलते हुए अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। साथ ही इन सेवाकेंद्रों पर आपके मार्गदर्शन में 500 से अधिक बेटियों ने अपना जीवन समाजसेवा में समर्पित किया। वर्तमान में आप मप्र की क्षेत्रीय निदेशिका के साथ प्रशासक सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका भी थीं। आपने विभिन्न अध्यात्मिक एवं सामाजिक विषयों पर मुख्य वक्ता के रूप में अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को संबोधित किया है। आपके नेतृत्व में 500 से भी अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आयोजन किया गया। दीदी ने प्रदेशभर में महिला सशक्तिकरण से लेकर नशामुक्ति, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण और किसानों के लिए कार्य किया है। आपके नेतृत्व में प्रदेश में सैकड़ों नशामुक्ति और किसान सशक्तिकरण अभियान निकाले गए। साथ ही प्रशासनिक सेवा क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए अनेक तनाव प्रबंधन कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

जब भी उनसे मिलते थे वह स्नेह आशीर्वाद के साथ मिलती थीं

श्रद्धेय बीके अवधेश दीदी अब हमारे बीच नहीं हैं। जन्म से मृत्यु तक सबका समय नियत है, लेकिन लोक कल्याण, जन कल्याण के लिए दीदी ने पूरा जीवन जीया है। गृहस्थ जीवन में भी राजयोग ध्यान के माध्यम से आत्म नियंत्रण कैसे हो वह दीदी से सीखने को मिलता है। जब भी उनसे मिलते थे वह स्नेह आशीर्वाद के साथ मिलती थीं। यह शरीर नश्वर है लेकिन विचार अमर हैं। दीदी जी विचारों से, सूक्ष्म शरीर से हमारे बीच में हैं। वह सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेंगी। दीदी का स्नेह और शिक्षाएं सदैव हमारे साथ रहेंगी। मप्र सरकार की ओर से दीदीजी को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। महाकाल से प्रार्थना करता हूं कि दीदी ने जैसा जीवन जीया है, वह स्मृतियां सदैव हमारे साथ रहें। वह हमेशा कमियों को छोड़ने और अच्छाईओं को धारण करने के लिए प्रेरित करती थीं। आपका समर्पण, सेवा एवं आध्यात्मिक जगत को समर्पित आपका जीवन सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा।

- **डॉ. मोहन यादव,** मुख्यमंत्री, मप्र

दीदी अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा से भरी थीं : केंद्रीय मंत्री चौहान

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश दीदी का देवलोकगमन हम सभी के लिए अत्यंत दु:खद है। वे रक्षाबंधन सहित अन्य सभी त्योहारों पर घर पधारती थीं और अपने साथ भरपूर स्नेह और आशीर्वाद लाती थीं। दीदी अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा से भरी थीं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोगों को सही दिशा दिखाने और उनको कल्याण के मार्ग पर लाने के लिए समर्पित कर दिया। दीदी ने हमें छोड़ा नहीं है, उनका आशीर्वाद सदैव हमारे साथ है।

- **शिवराज सिंह चौहान,** केंद्रीय कृषि मंत्री, भारत सरकार

अंतिम संस्कार में माउंट आबू से पहुंचे वरिष्ठ पदाधिकारी-

श्रद्धांजली सभा में माउंट आबू से अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने पहुंचकर श्रद्धांजली अर्पित की। वहीं अंतिम यात्रा में माउंट आबू से ज्ञान सरोवर की निदेशिका राजयोगिनी बीके प्रभा दीदी, आवास-निवास के प्रभारी बीके देव भाई, प्रशासक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके हरीश भाई, पीआरओ बीके कोमल भाई सहित सैकड़ों लोग पहुंचे। इंदौर जोन की निदेशिका बीके हेमलता दीदी, भिलाई से बीके आशा दीदी, इंदौर जोन से बीके रेवती दीदी, बीके आयुषी दीदी सहित देशभर से हजारों ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित कर अंतिम विदाई दी।

एक ईश्वर, एक विश्व का संदेश पूरे विश्व के नेताओं में उतर जाए तो विश्व में शांति आ जाए: पूर्व राज्यपाल

शिव आमंत्रण, भोपाल। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के भोपाल जोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके अवधेश दीदी की दिव्य स्मृति में रवींद्र भवन के हंस ध्वनि सभागार में श्रद्धांजलि समारोह आयोजित गया। इसमें पूरे प्रदेश सहित देशभर से लोगों ने भाग लिया।

पंजाब एवं हरियाणा के पूर्व राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि आज देश दुनिया में एकात्म भाव की बहुत आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारी द्वारा दिया जा रहा एक ईश्वर और विश्व एक का ये संदेश यदि पूरे विश्व के नेताओं में उतर जाए तो पूरे विश्व में शांति हो सकती है। वास्तव में मानव कैसे होता है वह देखना है तो यहां आना पड़ेगा। ब्रह्माकुमारी मानवीय संस्कार देने वाली संस्था है। मैं जब पहली बार माउंट आबू गया तो वहां से आकर पूरी तरह बदल गया।

सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि मैं उन सौभाग्यशाली लोगों में से हूं कि दीदी का सान्निध्य मिला। उनका अपनापन हर किसी को बांध लेता था। वह श्वेत वस्त्रों में संत थी। ऐसे संत केवल शरीर छोड़ते हैं लेकिन उनकी सूक्ष्म उपस्थिति सदा महसूस होती रहेगी। मैं पूरी मप्र सरकार की तरफ से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। महापौर मालती राय ने कहा कि जब भी आश्रम पहुंचती थी तो दीदी का सान्निध्य पाकर शांति महसूस होती थी। भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री हितानन्द शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कहा कि आज के युग में शांति का पाठ जन जन तक पहुंचाने का ब्रह्माकुमारी का यह प्रयास सराहनीय है। मैं सौभाग्यशाली हूं कि माउंट आबू दो बार जा चुका हूं। वहां बैठकर जो शांति का अनुभव होता है वह अवर्णीय है। शांति का संदेश देने में जो ब्रह्माकुमारी बहनों का सेवाभाव, त्याग और तपस्या अदभुत है। मप्र भाजपा मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल ने कहा कि दीदी ने जो आयाम स्थापित किए हैं वह हमें सदा प्रेरित करते रहेंगे। गुरुग्राम से आई ॐ शांति रिट्रीट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी ने कहा कि हमें अपने कर्मों की पूंजी को पुण्य की भूमि बनाना है। अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

संबोधित करते पूर्व राज्यपाल सोलंकी।

पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह

कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग

सैदपुर सेवाकेंद्र का चौथा वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया

शिव आमंत्रण, सैदपुर, गाजीपुर। ब्रह्माकुमारीज सैदपुर की स्थापना के चौथे सालगिरह के उपलक्ष्य में वार्षिकोत्सव एवं स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। गाजीपुर जिला प्रभारी ब्र.कु. निर्मला दीदी की अध्यक्षता में आयोजित राजयोग द्वारा तनाव मुक्ति एवं खुशनुमा जीवन विषय कार्यक्रम में समाज के विभिन्न वर्ग के प्रबुद्धजनों की उपस्थिति रही। सत्यदेव ग्रुप ऑफ कॉलेज के निदेशक डॉ. सदानंद राय ने कहा कि मनुष्य की अंतर्चेतना का विकास हुए बिना परिवर्तन संभव नहीं है और उस अंतर्चेतना के विकास के लिए परमसत्ता परमपिता परमात्मा से कनेक्शन जरूरी है। उस कनेक्शन के लिए जिस गुरु तत्व की जरूरत है वह इन बहनों में है। अपने जीवन से भौतिक पिपासाओं को त्यागकर जीवन के लिए नव चेतना जगाने की ताकत इन ब्रह्माकुमारी बहनों में है। हमें इन बहनों और इनके द्वारा चल रहे परमात्म कार्य को पहचानने की जरूरत है। सैदपुर के ब्लाक प्रमुख हीरा सिंह यादव ने कहा कि यह बहनें पूरे विश्व में सनातन धर्म और संस्कृति को जीवित करने वाली देवी स्वरूप हैं। समाजसेवी अम्बरीश सिंह ने कहा कि महिला सशक्तिकरण, आध्यात्मिक परिवर्तन या विश्व शान्ति की बात हो, हरेक क्षेत्र में संस्था की अपनी विशेष पहचान है। सारनाथ स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की ब्र.कु. तापोशी बहन, यूनियन बैंक आफ इंडिया के वरिष्ठ प्रबंधक ब्र.कु. संजय भाई ने भी संबोधित किया। इस दौरान सादात प्रभारी ब्र.कु. संजू बहन, गाजीपुर की ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु. प्रिंसी, सैदपुर प्रभारी ब्र.कु. स्मिता दीदी, बीके वंशनारायण सिंह, विमल भाई, क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी बीके विपिन भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

महिला पुलिस के लिए तीन दिवसीय सेल्फ एम्पॉवरमेंट कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, लखनऊ, उप्र। ब्रह्माकुमारीज जानकीपुरम और उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा महिला पुलिस के लिए तीन दिवसीय सेल्फ एम्पावरमेंट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य ड्यूटी के दौरान महिला पुलिस कर्मियों के तनाव को कम करना और उन्हें आत्म-सशक्तिकरण की विधियों से अवगत कराना है ताकि वे अपनी जिम्मेदारियों को अधिक कुशलता और संतुष्टि के साथ निभा सकें। इसमें मुंबई से पधारे मुख्य वक्ता प्रो. गिरीश भाई ने सभी प्रतिभागियों को सेल्फ एम्पावरमेंट और तनावमुक्ति की व्यावहारिक और सरल विधियां बताईं। उन्होंने आंतरिक शांति और मानसिक शक्ति के महत्व पर जोर दिया। एसीपी राजेश कुमार यादव ने ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा की जा रही सेवाओं की प्रशंसा की। इस दौरान बीके सुमन बहन और बीके निर्मला बहन, बीके स्नेह बहन भी उपस्थित रहीं।

13वीं वाहिनी विशेष सशस्त्र बल में तनाव प्रबंधन कार्यशाला आयोजित

शिव आमंत्रण, ग्वालियर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 13वीं वाहिनी विशेष सशस्त्र बल (एसएएफ 13 बटालियन) में 'तनाव प्रबंधन, खुशनुमा और स्वस्थ जीवन शैली' विषय पर एक प्रेरणादायक सत्र आयोजित किया गया। जिसका उद्देश्य लोगों को मानसिक शांति, सकारात्मक सोच और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रेरक वक्ता बीके प्रहलाद भाई और सेवाकेंद्र की संचालिका बीके आदर्श दीदी उपस्थित थीं। इस अवसर पर एसएएफ 13 बटालियन से प्रभारी सेनानी अनुराग पांडे, सहायक सेनानी गुलबाग सिंह, डॉक्टर ओपी वर्मा, निरीक्षक मुनेन्द्र सिंह भदोरिया, धर्मेंद्र वर्मा, मुकेश परिहार, पुष्पेंद्र सिंह भदौरिया, राय सिंह जयंत, बीके पवन, बीके रोशनी, बीके सुरक्षि सहित पीटीएस स्टाफ एवं 350 से अधिक प्रशिक्षणार्थी मौजूद रहे।

बिलासपुर के सत्संग भवन में संत सम्मेलन आयोजित, बड़ी संख्या में लोगों ने लिया भाग

यहां दिए जा रहे सनातन धर्म के ज्ञान की आवश्यकता है : महामंडलेश्वर

शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छत्तीसगढ़। ब्रह्माकुमारीज के धार्मिक प्रभाग द्वारा शिवरीनारायण क्षेत्र में गीता ज्ञान द्वारा सनातन संस्कृति की पुनः स्थापना विषय पर मेला ग्राउंड के पास सत्संग भवन में संत सम्मेलन आयोजित किया गया।

इसमें मुख्य वक्ता इंदौर से पधारे धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर बीके नारायण भाई ने कहा कि सनातन का अर्थ है शाश्वत और आत्मा शाश्वत है। आत्मा के गुण या धर्म कहो वह शांति, प्रेम, पवित्रता और जब यह गुण राजयोग के माध्यम से आत्मा में जागृत हो जाते हैं तो ही सत्य सनातन धर्म की स्थापना प्रारंभ होती है। यह कार्य स्वयं निराकार परमात्मा जो कि सदा सत्य शाश्वत हैं, वहीं आकर हम आत्माओं की ज्योति जगाते हैं। जिससे आत्मा के शाश्वत गुण की जागृति हो जाती है। गीता ज्ञान के द्वारा पुनः आदि सनातन संस्कृति की स्थापना हो जाती है। अपने आगे बताया कि हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई यह सब हमारे शरीर के धर्म हैं। आत्मा का मूल धर्म प्रेम, शांति, पवित्रता जिसका स्रोत परमात्मा शिव ही हैं।

मुख्य अतिथि सहारनपुर से पधारे आचार्य महामंडलेश्वर कमल किशोर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी के बारे में कई भ्रांतियां हैं कहते हैं कि यह सनातन धर्म को नहीं मानती हैं। जब मैं ब्रह्माकुमारी आश्रम गया तो पता चला यह तो शिव को ही मानती हैं। इनका मूल उद्देश्य नर ऐसी करनी करें जो नारायण बन जाए, नारी ऐसी करनी करें जो लक्ष्मी बन जाए। यही शाश्वत सनातन धर्म है जिसकी वर्तमान समय आवश्यकता है।

संत गोपाल दास ने कहा कि धन से ज्यादा है परमात्मा की धुन में खो जाना है। धन सदा आपके पास नहीं रहता है, जिसके पास धन है वहां विपत्ति रहती है। परमात्मा का नाम रुपी धन सदा आपके साथ है तो सदा आप सुरक्षित रहेंगे।

पामगढ़ विधायक शेष राज हरबंस ने बताया कि ब्रह्माकुमारी की सराहना की। महंत ओम प्रकाश ने कहा कि ऐसे संतों का आगमन हमारे शिवरीनारायण तीर्थ स्थान के लिए गौरव का विषय है। संत हौसला प्रसाद ने कहा कि बिना धर्म से जुड़े सुख शांति का वास जीवन में नहीं हो सकता। स्वामी दिनेश प्रसाद गोस्वामी ने भी संबोधित किया। संचालन बीके राखी बहन ने किया। आभार बीके लक्ष्मी बहन ने माना।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, मुंबई। डोंबिवली में आयोजित समारोह में महाराष्ट्र भाजपा अध्यक्ष रविंद्र चव्हाण ने राजयोगी ब्रह्माकुमार निकुंज को उनके गहन लेखन और प्रेरणादायक विचार नेतृत्व के लिए जन चेतना रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया।

शिव आमंत्रण, बहल, हरियाणा। दैनिक जागरण समाचार पत्र के पूर्व प्रधान संपादक नरेंद्र मोहन गुप्त की 91वीं जयंती प्रेरणा दिवस पर राजयोगिनी बीके शकुंतला बहन, बीके पूनम बहन को शाल व मोमेंटो से दैनिक जागरण हिसार यूनिट के वरिष्ठ समाचार संपादक राकेश क्रांति ने सम्मानित किया। इस दौरान मार्केट कमेटी के चेयरमेन रवि महमिया बहलवाला, योगा ट्रेनर कविता आर्य, सरपंच साधुराम पनिहार, डॉ एनपी गौड़ भी मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, सुन्नी/शिमला, हिमाचल प्रदेश। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद का सातवां वार्षिक सम्मेलन सेवाकेंद पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पूर्व सांसद सुरेश चंदेल को माउंट आबू से पहुंचे ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक बीके प्रताप भाई, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई, बीके सरला बहन, बीके शकुंतला बहन एंव बीके रेवा दास भाई ने मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया।

शिव आमंत्रण, घुवारा/छतरपुर। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद पर राष्ट्रीय गौपी पीठाधिश्वर महंत विपिन बिहारी दास महाराज का आगमन हुआ। उन्होंने ब्रह्माकुमारी बहनों से अध्यात्म पर चर्चा की। बीके नीतू बहन, बीके मोहनी ने महाराज का स्मृति चिंह भेंटकर सम्मान किया। इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष लखन फौजदार व अन्य भाई-बहन मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, येवला, महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज द्वारा नवरात्रि के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज द्वारा चैतन्य नौ देवियों की झांकी सजाई गई। जगदंबा देवस्थान ट्रस्ट के अध्यक्ष रावसाहेब कोटमे, उपाध्यक्ष भाऊसाहेब आदमाने ने बीके नीता दीदी व बीके अनु दीदी को नवदुर्गा पुरस्कार से सम्मानित किया।

संगम गौरवपूर्ण वृद्धावस्था और सम्मानित जीवन प्रोजेक्ट का शुभारंभ

सामाजिक जुड़ाव ही तन-मन के स्वास्थ्य का आधार है: जज

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के किशोर सागर में संगम गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें न्यायाधीश राजेश देवलिया ने कहा कि बुजुर्गों के पास नॉलेज है, हर कार्य का अनुभव है इसलिए घर से निकलिए समाज के कुछ काम आइए, क्योंकि यदि घर में ही बने रहेंगे तो बीमारियां पकड़ लेंगी। वरिष्ठ नागरिक जब भी अवसर मिले सामाजिक कार्यों में अवश्य जाएं। सामाजिक जुड़ाव ही मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का आधार है।

डीआईजी विजय कुमार खत्री ने कहा कि हमें सबकुछ बच्चों को नहीं सौंप देना चाहिए। स्वयं को आर्थिक रूप से सशक्त रखना चाहिए, क्योंकि आर्थिक स्वतंत्रता एक बहुत बड़ी पूंजी है आपके लिए ताकि आपका बचा हुआ जीवन गौरव और सम्मान से व्यतीत हो सके। हम स्वेच्छा से किसी को दान कर सके जरूरतमंदों की सेवा कर सकें, किसी से मांगना ना पड़े। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा ने कहा कि 'संगम गौरवपूर्ण वृद्धावस्था और सम्मानित जीवन' भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय एवं ब्रह्माकुमारीज की एक संयुक्त पहल है, जिसका उद्देश्य बुजुर्गों के लिए एक सम्मानजनक और सार्थक जीवन सुनिश्चित करना है। युवा पीढ़ी में बुजुर्गों के प्रति सम्मान और स्नेह की भावना पैदा करना, बुजुर्गों को अकेलेपन, उपेक्षा और मानसिक तनाव से बचाना है। इस अवस्था को वरदानी अवस्था कहें और सभी को दुआएं और वरदान दें। पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अर्चना गुड्डू सिंह, दर्शना वृद्ध आश्रम संचालिका प्रभा विदु, पत्रकार सुरेंद्र अग्रवाल, दर्शना महिला समिति राजेश गुप्ता भी मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, मुलुंड, महाराष्ट्र। मुलुंड सबजोन के वार्षिकोत्सव पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली से पधारीं महिला प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी ने प्रेरणादायक एवं आत्म-जागृतिपूर्ण क्लास कराई। साथ ही अपने गहन आध्यात्मिक अनुभव सांझा किए। राजयोगिनी बीके डॉ. गोदावरी दीदी ने भी अपनी शुभकामनाएं दीं। इसमें बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। साथ ही देशभक्ति नाटक प्रस्तुत किया गया। विश्व एकता सम्मेलन नामक लघुनाटिका से शांति, सहयोग और वैश्विक भाईचारे का संदेश दिया।

शिव आमंत्रण, दुर्ग, छग। ब्रह्माकुमारीज़ के बघेरा स्थित 'आनंद सरोवर' में युवा समिट 'नशा मुक्त युवा-विकसित भारत' का आयोजन किया गया। इसमें रुंगटा कॉलेज में छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि भूपेंद्र कुलदीप (कुलसचिव, हेमचंद विश्वविद्यालय दुर्ग), आरएल ठाकुर (संयुक्त संचालक, शिक्षा विभाग), डॉ. दीपक कोठारी, डॉ.सत्यधर्म भारती, संचालिका बीके रीटा दीदी, बीके रूपाली दीदी, बीके चैतन्य प्रभा दीदी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, जालंधर, पंजाब। ओलंपियन सुरजीत हॉकी स्टेडियम में पंजाब हॉकी लीग का फाइनल मैच खेला गया, जिसमें स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया सोनीपत और नेवल टाटा हॉकी अकादमी जमशेदपुर आमने-सामने रहे। इसमें मुख्यमंत्री भगवंत मान की विशेष उपस्थिति रही। इस दौरान राजयोगा भवन आदर्श नगर से बीके लक्ष्मी दीदी ने संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं और नशा मुक्त भारत अभियान के बारे में अवगत कराया। बीके सिमरन बहन, बीके नेहा बहन, बीके रशिम महाजन, बीके सागर भी उपस्थित रहे।

प्राचीन सनातन संस्कृति भी कृषि पर आधारित रहती है : राजयोगी राजू भाई

शिव आमंत्रण, जगदलपुर, छग। ब्रह्माकुमारीज द्वारा डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी सभागार में भारतीय कृषि दर्शन एवं सम्पूर्ण ग्राम विकास विषय पर किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया।

माउंट आबू से आए कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजयोगी बीके राजू भाई ने कहा कि भारत देश ग्रामों का देश है। भारत की प्राचीन संस्कृति सनातन संस्कृति भी कृषि पर आधारित रहती है। मानव सृष्टि के प्रारंभ से सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग चारों युगों में जीवन निर्वाह के लिए किसानों ने ही फल, फूल, सब्जी, दूध, अन्न, जल आदि उपलब्ध कराया। प्राचीन संस्कृति कृषि संस्कृति रही है, इसी संस्कृति के आधार पर भारत में हर त्यौहार मनाये जाते हैं। वर्तमान समय जलवायु में परिवर्तन हो रहा है। कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि से फसलें नष्ट हो जाती है। आज कृषि के अनेक संसाधन कृषि यंत्र आए, जिससे किसानों को कम मेहनत में अच्छी फसल उगाने का चांस मिल गया। महापौर संजय पांडे ने कहा कि वास्तव में शाश्वत यौगिक खेती हमारे क्षेत्र में एक चेतना का आरंभ है। जब कृषक स्वावलंबी और आत्मनिर्भर होता है तो वह देश भी सशक्त होता है। इंदौर जोन की निदेशिका बीके हेमा दीदी, प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके सुमन्त भाई, धमतरी सेवाकेन्द्र संचालिका बीके सरिता दीदी ने भी संबोधित किया। स्वागत भाषण बस्तर संभाग की संचालिका बीके मंजूषा दीदी ने दिया। संचालन बीके रामा दीदी ने किया।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, रांची, झारखंड। ब्रह्माकुमारीज़ चौधरी बागान हरमू रोड में संगम गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन कार्यक्रम में अधिवक्ता संघ के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र मिश्र, समाजसेवी सत्यनारायण शर्मा, माहेश्वरी समाज अध्यक्ष किशन साबू, पूर्व प्रबंधक अशोक कुमार सिन्हा, डॉ. प्रियदर्शनी विजयलक्ष्मी, प्रो. डॉ सुनीता ठाकुर, दीपशिखा बाल विकास संस्थान के निदेशक सुधा लिल्हा, वाणिज्य कर उपायुक्त अजय वर्मा, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके निर्मला ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, हिसार, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व शांति दिवस पर 'पीस पैलेस' बालसमंद रोड पर नशा मुक्ति स्वास्थ्य एवं बुजुर्गों के सम्मान हेतु सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. अंकुर कामरा, डॉ. सुजाता ने हेल्थ टिप्स बताए। बीके अनीता दीदी ने ने नशा न करने व जीवन में स्वदेशी वस्तुएं खरीदने की शपथ दिलवाई। बीके नीरज दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बीके अंतिमा बहन ने सभी को राजयोग मेडिटेशन से शांति की गहन अनुभूति करवाई।

शिव आमंत्रण, कादमा, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के स्पोर्ट्स विंग द्वारा जिला स्तरीय खिलाड़ियों का सम्मान समारोह व खेलों में मूल्यों की शक्ति विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जिला खेल अधिकारी विकास सांगवान, बीडीपीओ आदित्य श्योराण, राजयोगी बीके मेहरचंद भाई, दिल्ली से बीके सरिका बहन, बीके वसुधा बहन, बीके जितेन्द्र भाई ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, आगरा, उप्र। ब्रह्माकुमारीज गैलेरी गैलरी म्यूजियम द्वारा विमल पार्क सेवला में राजयोगिनी बीके विमला बहन की 9वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इसमें कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य ने कहा कि बीके विमला बहन जी ने महिला सशक्तिकरण और समाज उत्थान के लिए जो निःस्वार्थ सेवाएं दीं, वह अद्वितीय हैं। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। प्रभारी शीला दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, राजगढ़, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर विद्यार्थियों के लिए नई उमंग- नई तरंग विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से बीके रोहित भाई, डॉ. अभिनव विजयवर्गीय, अहिंसा वेलफेयर सोसाइटी के प्रभारी अरुण सतालकर, बॉयज़ हॉस्टल प्रभारी मुकेश पिपलोटिया, पंजाब बैंक के मैनेजर दीपक मोची, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मधु दीदी ने विचार व्यक्त किए।

मातृ स्नेही बनो तब हर कोई मानेंगे सुनेंगे, उस पर चलेंगे

प्रेरणापुंज

राजयोगिनी दादी जानकी,
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउंट आबू

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

कभी-कभी सहन शक्ति कम हो जाती है सहनशक्ति कम होने के कारण गुस्सा भी आता है और उस गुस्से में कभी-कभी संबंध भी खराब हो जाते हैं तो हम कैसे अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं? जवाब- अंतर्मुखता के साथ आध्यात्मिकता बहुत मदद करती है। आध्यात्मिकता अंदर ही अंदर अपने आप को समझने में सामने जो बातें हैं उसको समझने में सहज कर देती है। संबंधों में जब कोई बातों को फील करता है तो भारीपन आता है। टोन चैंज हो जाता है, फिर स्नेह के बगैर रूखापन आ जाता है। जब रूखापन संबंध में हो तो जीवन नहीं है। लौकिक में मैं माता और बहन के हिसाब से बड़ी थी। मैंने देखा वह लोग सहन नहीं कर सकते तो मैं करती थी। क्योंकि बहुत काम होता है घर का काम बच्चों का काम जिसमें लोग थक जाते हैं। थकने के कारण सहनशक्ति नहीं होती है। फिर आवाज बदल जाता है, तो यह ध्यान रखना चाहिए कि सब अच्छा है। जब से जो माताएं ज्ञान मार्ग में आई हैं घर स्वर्ग बनता जा रहा है। घर तो वही है वही बाल बच्चे हैं, वही काम है फिर भी बाल बच्चों को प्यार से शिक्षा देते जाओ खुद उस पर चलो। मातृ स्नेही बनो तब हर कोई मानेंगे, सुनेंगे, चलेंगे। बच्चों के नहीं सुनने के कारण यह है कि हमारे पालना का तरीका ऐसा नहीं है जो सुने। मैंने अनुभव किया है कि प्यार से बच्चों को चलाओ। जब मैं ज्ञान मार्ग में आई तो सभी ने हमें बेबी मॉल नाम रखा। सभी माताओं ने हमें अपना बच्चा संभालने को दे दिया। मेरी 21 साल की उम्र थी। उससे पहले हमने एक भी बच्चा नहीं संभाला। लेकिन हमने 40 बच्चों को संभाला। बच्चों को सही टाइम पर उठाना, बिठाना, खिलाना-पिलाना करती थी। सभी बहुत खुश थे। सहनशक्ति के साथ संतुष्टि का कनेक्शन है अगर मैं संतुष्ट हूं तो सहनशील भी रहूंगी।

> ▪ मधुर संबंधों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है सहनशक्ति का विकास करना

कई बार परिवार के अंदर सबका मन संभालना पड़ता है सबका मन संभालते-संभालते अपना मन डिस्टर्ब हो जाता है तो उसके लिए राजयोग मदद कर सकता है। राजयोग माना साइलेंस में जाना, शांति में रहने के लिए साइलेंस चाहिए। साइलेंस क्यों जाना मतलब परमात्मा से कनेक्शन रिलेशन अर्थात हमारे अंदर परमात्मा की शक्ति आ गई। तो हमारा संबंध किसके साथ है एक तो हमारा माता-पिता परमात्मा वैसा मैं आत्मा। परमात्मा हमारे माता-पिता सद्गुरु, सखा, बंधु, शिक्षक सभी संबंधों में हैं। यह संबंध अंदर से बहुत शक्ति देती है। अशांत वातावरण में अंदर से डिस्टर्ब आत्माओं को सूक्ष्म गुप्त रूप से राजयोग अभ्यास करने की जरूरत है।

सहनशक्ति से परिवार में रहेगी सुख-शांति....

जितना हम परिवार में सहनशक्ति के साथ चलेंगे, एक-दूसरे की कमी-कमजोरियों को अपने अंदर समाएंगे। एक-दूसरे की विशेषताओं को देखते हुए उन्हें आगे बढ़ाने में मदद करेंगे। उनकी हौसला आफजाई करेंगे तो इस तरह हमारे आपसी संबंध मधुर और प्रेममय बने रहेंगे। जब हम पारिवारिक संबंधों में एक-दूसरे की कमी-कमजोरियों को देखते हैं, आरोप-प्रत्यारोप लगाते हैं तो मनमुटाव होता है। संबंधों में तनाव बढ़ता है जो आपसी दूरियां बना देता है। मधुर और प्रेममय, सुखमय संबंधों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है अपने अंदर सहनशक्ति का विकास करना।

रियल लाइफ **प्रजापिता ब्रह्मा बाबा,** संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

जब मातेश्वरी के स्वागत के लिए रेलवे स्टेशन पर उमड़े लोग...

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

आगे ब्रह्माकुमारी कमलसुन्दरी जी ने लिखा है जब सभी को सभा में यह संदेश सुनाया गया कि मातेश्वरी जी ने उनका वह निमन्त्रण स्वीकार किया है तो वे खुशी से फूले न समाते थे। माँ की मधुर वाणी सुनने के स्वप्न साकार होते देखकर उनके मुख-मण्डल पर हर्ष की जो रेखाएँ बन आई थीं, वो समस्त सांसारिक सुख प्राप्त होने पर भी वैसी नहीं हो सकती थीं। उन्हें तो यह खुशी थी कि मातेश्वरी जी से सम्मुख ईश्वरीय ज्ञान सुन कर, उनके जन्म-जन्मान्तर की मन की मैल मिटेगी और वे यह भी सोचते थे कि वे अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों को भी मातेश्वरी जी के, आलोकित करने वाले प्रवचनों से लाभान्वित करने का यत्न करेंगे। अतः खूब तैयारियाँ होने लगीं और दिन गिनते-गिनते उत्सुकता बढ़ने लगी। जब वह दिन आ पहुँचा तब रेलवे स्टेशन पर उनका स्वागत करने के लिए ब्रह्मा-वत्स काफ़ी बड़ी संख्या में पहुँचे हुए थे। सभी श्वेत वस्त्रधारी सभी हर्षित-मुख। प्लेटफार्म पर अन्य यात्री तथा उनको छोड़ने आए हुए उनके मित्र देखकर आश्चर्य में पड़े हुए थे कि आज क्या होने वाला है? ये सभी यहाँ क्यों इकट्ठे हुए हैं? उनके मस्तक पर प्रश्न-चिन्ह भी बना हुआ था। ब्रह्माकुमार उन्हें कुछ ईश्वरीय साहित्य देकर माँ का परिचय देते थे। सभी को खुश देख कर हर्ष के चिन्ह तो उनके चेहरों पर भी जा पहुँचे थे। वे भी उत्सुकता से वहीं खड़े हो जाते थे। सारे वातावरण में एक अपूर्व खुशी की लहर थी और सभी आँखें गाड़ी के आने की दिशा पर लगी थीं।

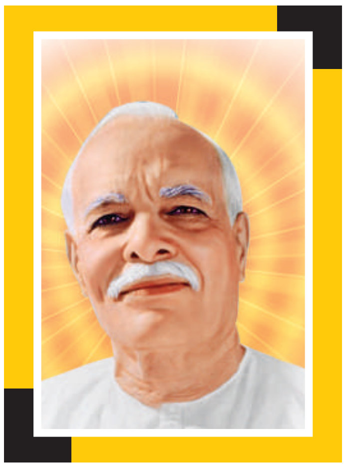

मना करने के बाद भी फूल-मालाएं लेकर पहुंचे लोग

स्टेशन पर लोग मना करने पर भी फूल मालाएँ ले आये थे। उन्होंने सोचा होगा कि जन्म-जन्मान्तर, जब हमें माँ की पहचान नहीं थी तब तो हम माँ की मूर्तियों पर पुष्प अर्पित करते रहे पर उसके दर्शनों की प्यास न बुझी और अब जब नयनों को अंजन देने वाली माँ आयेंगी तो क्या हम माँ को पुष्प भी भेंट न करें? अतः पहले से रोकने पर भी वे रुके नहीं बल्कि अच्छे-से-अच्छे सुगन्धिपूर्ण, खिले हुए फूल, गुलदस्ते और पुष्प मालाएँ ले आये थे। परन्तु पुष्प तो उनके स्नेह एवं आदर भाव की अभिव्यक्ति मात्र थे, वास्तव में विशेष चीज तो उनकी उच्च मनोभावना ही थी।

.. वह देखो गाड़ी छुक छुक करती प्लेटफार्म पर आ रही है और सभी के नयन माँ को ढूँढ़ रहे हैं। माँ भी अपने कम्पार्टमेंट के द्वार में बच्चों को निहारने के लिए मुसकराती हुई खड़ी हैं। क्या कोई वर्णन कर सकता है उस सुखद घड़ी का जब माँ ने बच्चों के बीच देहली धरनी पर पदार्पण किया। बस, सभी का मनवा उल्लास और अपनत्व से भर कर यही कह रहा था - 'यह हमारी माँ है..... हमारी माँ आ गई है....।'

अरे यह ज्ञानवीणा वादिनी सरस्वती माँ हैं। यह वही हैं जिनको चित्रकार हँसवाहिनी विद्या वरदायिनी के रूप में चित्रित करते हैं। धन्य हैं हमारे ये नयन और सफल हैं हमारी ये जीवन की घड़ियाँ कि हम बिछुड़े बच्चों का माँ से अलौकिक मिलन हुआ। अरे कितने भाग्यशाली हैं हम जिन्हें माँ की पहचान मिली है.... **(क्रमशः)**

अव्यक्त इशारे **राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़**

जहां बाबा वहां और कोई दिल में बैठ नहीं सकता

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

बाबा के साथ का अनुभव करने के लिए पहले यह चेकिंग करो कोई भी व्यक्ति से सम्बन्ध अगर गहरा होगा तो बाबा से नहीं होगा क्योंकि जहां बाबा है वहां और कोई दिल में बैठ ही नहीं सकता है। अगर बाबा के साथ का अनुभव होता है, संबंध की फीलिंग आती है तो उस समय की अवस्था क्या होती है? हम लोगों को साकार में भी साथ का अनुभव है और अव्यक्त व निराकार के साथ के सम्बन्ध का भी अनुभव है इसलिए कभी अपने ऊपर बोझ महसूस नहीं होता। लेकिन जिन्हें इसका अनुभव नहीं है तो सोचते हैं - बाबा बैठा है ना, बाबा है तो सही ना। जिम्मेवार तो वह है ना! ऐसे-ऐसे क्वेश्चन उठते हैं लेकिन अनुभव नहीं होता। अनुभव हो तो कभी अपने को कमज़ोर नहीं समझेंगे। हज़ार भुजा वाला बाबा साथ है ऐसी रीयल फीलिंग प्रैक्टिकल में आती है तो उस समय इतना बल आ जाता है जो परिस्थिति उसके आगे बहुत छोटी-सी लगती है क्योंकि साथ का अनुभव होगा । तो बाबा ऊँचे-से-ऊँचा है और साथ के अनुभव से हमारी स्थिति भी ऊंची हो जाती है। हम ऊँचे हो गये तो परिस्थिति कितनी भी बड़ी हो, वह छोटी ही दिखाई देगी। जैसे प्लेन में ऊपर जाते हैं तो सारी दिल्ली एक मॉडल लगती है। वैसे आप एक एरिया भी नहीं घूम सकते। तो ऊंचा जाने से वह परिस्थिति वा हालतें सब छोटी दिखाई देती हैं। दुनिया वाले कहते हैं पहाड़ राई के समान दिखाई देता है, बाबा ने कहा राई भी नहीं रुई । राई फिर भी सख्त होती है, रूई को ऐसे फूंक दो तो उड़ जायेगी। ऐसे ही बाबा साथ है तो उसी समय कोई बड़े-से-बड़ी परिस्थिति भी जैसे कुछ नहीं है। तूफ़ान भी एक मनोरंजन खेल लगेगा फिर माया वार नहीं कर सकती, वह खुद ही भाग जायेगी। लेकिन इसके लिए पहले हमारा संबंध गहरा है ? और बाबा से अटूट प्यार है ? कई बार जिस समय कोई बात होती है उस समय प्यार पैदा होता है, बाबा आप तो सर्वशक्तिवान हो, आप तो क्षमा के सागर हो .... उस समय याद आता लेकिन साधारण रीति से वह स्मृति इमर्ज नहीं रहती, मर्ज रहती है। कई फिर साथ रहते भी हैं लेकिन समय अनुसार उस साथ को प्रयोग में नहीं लाते।

बाबा तो बुद्धिवानों की बुद्धि है...

हम लोगों को तो बाबा के साथ का ऐसा अनुभव है, जो सब तरफ़ ना होते भी बाबा के साथ का जब हम प्रयोग करते तो बाबा के साथ का बल इतना मिलता है, बाबा तो बुद्धिवानों की बुद्धि है, वह किसी की भी बुद्धि को टच कर लेता है। जो असम्भव है वह इतना सहज सम्भव हो जाता है जो समझ भी नहीं सकते कि यह न से हां हुई कैसे। लेकिन यह है बाबा के साथ की मदद। कई कहते हैं बाबा साथ तो हैं लेकिन कोई को बाबा बहुत मदद देता है, हमें मदद कम देता है, पता नहीं क्यों? बाबा से रूह-रूहान तो करते हैं लेकिन क्लीयर जवाब नहीं मिलता है? हम तो बाबा के पास सब रखते हैं, बाबा यह है, यह है...बाबा के आगे क्वेश्चन भी रखते हैं लेकिन उत्तर नहीं मिलता है। कोई को मिलता है, कोई को नहीं मिलता है कारण ? क्या जिसको उत्तर मिलता है उससे बाबा का विशेष प्यार है, जिसको नहीं मिलता है उससे कम है? बाबा का तो गीत है - मुझे काँटों से भी प्यार है, फूलों से भी प्यार है। फिर कारण क्या होता है ? हमारी बुद्धि कैच नहीं कर पाती है क्योंकि सूक्ष्म है ना। कोई स्थूल आवाज़ तो आयेगा नहीं। बाबा कोई आवाज़ से तो कहता नहीं है कि बच्ची ऐसे करो, ऐसे नहीं। यह तो सूक्ष्म टच करता है, परन्तु हमारी बुद्धि सूक्ष्म है ही नहीं, युद्ध में है, बाबा को याद करते हैं फिर थोड़ा बाड़ीकान्सेस में आ जाते हैं। फिर कहते अभी तो बाबा को याद करना है, अभी सेवा भी याद नहीं करनी है।

तो युद्ध की स्थिति जो होती है उसमें मन बुद्धि क्लीयर नहीं होता है, उसमें लगा हुआ बिज़ी है, खाली नहीं है। जैसे फोन मिलाते हैं और लाइन बिजी है तो हमको रेसपाण्ड कैसे मिलेगा। तो पहले हम देखें कि हमारा मन-बुद्धि कहाँ इंगेज़ तो नहीं है ? युद्ध कर रहे हैं तो इंगेज़ हुआ ना। फिर बाबा का रेसपाण्ड कैसे मिलेगा। अगर वह कर भी रहा है तो हमको कैसे सुनने में आयेगा, कैसे होगा। इन्स्ट्रूमेंट ठीक होना चाहिए। पहले अपने मन-बुद्धि को क्लीयर करना चाहिए। जिसे बाबा कहते हैं साफ दिल मुराद हासिल।

यौगिक खेती में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रयास सराहनीय हैः कृषि मंत्री

शिव आमंत्रण, मोहाली, पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ सुख शांति भवन फेज 7 द्वारा कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के तहत मेरा गाँव बने महान विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
इसमें मुख्य अतिथि कृषि मंत्री गुरमीत सिंह खुड़ीयन ने कहा कि किसानों और सरपंचों में यौगिक खेती की जागरूकता फैलाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। पंजाब देश को 24 प्रतिशत चावल और 49 प्रतिशत गेहूं प्रदान करता है। प्रभाग की अध्यक्ष बीके सरला दीदी ने कहा कि आज यौगिक खेती को अपनाना अत्यंत आवश्यक है, जिसमें आध्यात्मिकता, सकारात्मक सोच और प्राकृतिक पद्धतियों का समावेश है। उन्होंने किसानों और सरपंचों से आग्रह किया कि वे सकारात्मक एवं दिव्य विचारों को अपनाएं ताकि स्वयं का और समाज का कल्याण हो सके। मोहाली-रूपनगर सर्कल प्रभारी बीके प्रेमलता दीदी ने कहा कि राजयोग ध्यान न केवल मन को शांत करता है, बल्कि खेती को भी श्रेष्ठ बनाता है। यदि हम शुद्ध विचारों और सात्विक भावना के साथ खेती करें तो हमारे गांव समृद्ध और महान बन सकते हैं। एडीसी सोनम चौधरी ने कहा कि यदि हमारे संकल्प पवित्र और वाइब्रेशन्स सकारात्मक हों, तो हम कृषि उत्पादन और आत्मनिर्भरता दोनों को बढ़ा सकते हैं। कृषि अधिकारी डॉ. गुरदियाल कुमार ने कहा कि कृषि को आध्यात्मिकता से जोड़ना और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है। माउंट आबू से आए बीके प्रकाश भाई स्वागत किया। कार्यक्रम में 350 सरपंच, पंच और प्रगतिशील किसान शामिल हुए।

ब्रह्माकुमारीज़ ने जो भी बीड़ा उठाया है उसे अंजाम तक पहुंचाया हैः विधायक

शिव आमंत्रण, नीमच, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नशामुक्ति, पर्यावरण एवं स्वच्छता के क्षेत्र में जमीनी कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विधायक दिलीपसिंह परिहार ने कहा कि ब्रह्माकुमारी के भैया-बहनों ने जो भी बीड़ा उठाया है उसे अपने अंजाम तक पहुंचाया है, चाहे वो नशा मुक्ति हो या पर्यावरण या स्वच्छता अथवा यातायात के नियमों का पालन हो। सभी सामाजिक क्षेत्रों में ब्रह्माकुमारी की कार्ययोजना हमेशा सफल रही है। पुलिस महानिरीक्षक संदीप दत्ता ने कहा कि ब्रह्माकुमारी से मैं वर्षों से जुड़ा हूं और देखा है कि इनके सभी कार्यकर्त्ता अपने तन-मन से समर्पित भाव से देश और समाज की सेवा करते हैं। सभी अतिथियों सहित नपा अध्यक्ष स्वाति चौपड़ा, बीके सविता दीदी, निदेशक बीके सुरेन्द्र भाई, बीके राकेश भाई ने हरी झंडी दिखाकर वाहन रैली का शुभारंभ किया।

नांगलोई में खुशनुमा जीवन जीने की कला विषय पर कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, नांगलोई, दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कारण वाटिका में खुशनुमा जीवन जीने की कला विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी को सुनने के लिए लोगों में इतना उत्साह था कि बारिश के बीच भी मैदान में डटे रहे। माउंट आबू से पधारे माइंड ट्रेनर मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. बीके शक्तिराज ने माइंड ट्रेनिंग और प्रैक्टिकल लाइफ कोचिंग एक्टिविटी के द्वारा मंत्रमुग्ध किया। मुंबई से पधारे सुप्रसिद्ध गायक हरीश मोयल ने परमात्मा के गीतों से सभी को परमानंद का अनुभव कराया। अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय सचिव जगद्गुरु शिवाचार्य साध्वी विश्वरूपा महाराज, स्टेट जनरल सेक्रेटरी नरेश कुमार ऐरन, जिला अध्यक्ष रामचंद्र सिंह चावड़िया, नांगलोई सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आदेश बहन मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

ओम शांति रिट्रीट सेंटर में तीन दिवसीय न्यायविद सम्मेलन आयोजित

असली लीडर वो है, जिसका लोग अनुसरण करें : न्यायाधीश

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के भोराकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में तीन दिवसीय न्यायविद सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें उड़ीसा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शशिकांत मिश्रा ने कहा कि संतुष्टता ही सबसे बड़ा धन है। राजयोग चित्त की वृत्तियों को नियंत्रित करता है। जिससे मन तनावमुक्त होता है। नेतृत्व का वास्तविक अर्थ तनावमुक्त नेतृत्व से है। असली लीडर वो है, जिसका लोग अनुसरण करें। गीता में भी कहा गया है कि महान जन जो करते हैं, सामान्य मनुष्य उसे फॉलो करते हैं। चेतना की जागृति ही नेतृत्व क्षमता को जन्म देती है। बिना भय और पक्षपात का निर्णय तभी होता है, जब हम अंतर आत्मा की आवाज सुनते हैं। नेतृत्व क्षमता की असली शुरुआत परिवार से होती है। क्योंकि बच्चे के लिए उसके मात-पिता ही लीडर होते हैं।

न्यायिक प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी पुष्पा दीदी ने कहा कि दूसरों का न्याय करने से पहले स्वयं के साथ न्याय करना भी जरूरी है। जीवन को सुख-शांति और खुशियों से भरना ही स्वयं के साथ न्याय करना है। क्योंकि बेहतर निर्णय के लिए शांत मन होना जरूरी है। राजयोग हमें स्वयं से जोड़ता है। जिससे हमारे आंतरिक गुण और शक्तियां जागृत होती हैं। मन की शक्ति अर्थात स्व स्थिति के आधार से ही हम परिस्थिति का सामना कर सकते हैं। स्वयं की शक्तिशाली स्थिति ही दूसरों को नेतृत्व प्रदान कर सकती है।

दिल्ली बार काउंसिल के चेयरमैन कैलाश चंद्र मित्तल ने कहा कि कानून बनने के बाद भी आज अपराध बढ़ते ही जा रहे हैं। जिसका मूल कारण नैतिक और चारित्रिक पतन है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही सामाजिक बदलाव संभव है।

दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता राजकुमार यादव ने कहा कि निरंतर योग और आध्यात्मिक चेतना के विकास से ही निष्पक्ष और यथार्थ निर्णय लेने में मदद मिलती है। बीके निशा बहन ने राजयोग के अभ्यास से गहरी शांति की अनुभूति कराई। प्रभाग के संयोजक बीके नथमल ने आभार माना। संचालन अधिवक्ता बीके प्रदीप ने किया।

सार समाचार

शिव आमंत्रण, चुनार, मिर्जापुर, उप्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 90 दिवसीय मेरा भारत, नशा मुक्त भारत अभियान की लांचिग की गई। इसमें नेपाल की निदेशिका बीके परिणीता दीदी, नारायण स्वामी महाराज, मुंबई से डॉ. सचिन परब, प्रबंधक बीके दीपेन्द्र, बीके पंकज दुबे, बीके बीनू व अन्य मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, विसनगर, गुजरात। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा एंजल पार्क रालीसणा में पवित्र जीवन यात्रा महोत्सव आयोजित किया गया। इसमें मेहसाणा सबज़ोन माताओं, कुमार-कुमारियों का सम्मान किया गया। समारोह में माउंट आबू से बीके शीलू दीदी, बीके सरला दीदी, बीके तृप्ति दीदी, हनुमान मंदिर के महंत राजारामगीरी, एपीएमसी के चेयरमैन प्रितेश भाई पटेल ने अपने विचार व्यक्त किए।

शिव आमंत्रण, बहल, हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर भाजपा के नवनियुक्त पदाधिकारीयों का पगड़ी, अंगवस्त्र, मोमेंटो, प्रसाद और साहित्य देकर सम्मान किया गया। सेवाकेंद्र संचालिका बीके शकुंतला दीदी ने राजयोग के बारे में बताया। इस दौरान नवनियुक्त जिला उपाध्यक्ष सुनील शर्मा, मंडल अध्यक्ष सुनील सांगवान, मार्केट कमेटी के पूर्व चयरमैन सुशील केडिया सहित अन्य नेता मौजूद रहे।

शिव आमंत्रण, हरपालपुर (छतरपुर) मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ग्राम के वरिष्ठ बुजुर्गों का सम्मान सेवाकेंद्र संचालिका बीके आशा दीदी द्वारा किया गया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने ध्यान, गीत और प्रेरक विचारों के माध्यम से उपस्थित जनों को आंतरिक शांति व आत्म-सम्मान की अनुभूति कराई।

शिव आमंत्रण, पतरातू, रामगढ़ (झारखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पीटीपीएस द्वारा पीवीयूएनएल, थर्मल पावर स्टेशन हॉस्पिटल परिसर में मेन्टल हेल्थ अवेयरनेस कार्यक्रम रखा गया। इसमें डॉ. पीयूष रंजन, बीके रामदेव और बीके रौशनी बहन का सीएमओ डॉ. तन्मय मिश्रा ने सम्मान किया।

ब्रह्माकुमारीज़ का भारत के इतिहास में हजारों हृदय रोगियों को ठीक करने का रिकार्ड

हर मरीज का तैयार किया गया है डाटाबेस, हृदय रोग विशेषज्ञों के लिए शोध का विषय बना थ्रीडी हेल्थकेयर प्रोग्राम

शिव आमंत्रण, आबू रोड

थ्रीडी हेल्थ केयर प्रोग्राम (कैड)। एक ऐसा अनोखा ट्रेनिंग प्रोग्राम है जहां हृदयरोगियों को मरीज न कहकर दिलवाले कहा जाता है। यहां मरीज एक-दूसरे को दिलवाले कहकर पुकारते हैं। दस दिवसीय इस ट्रेनिंग में भाग लेकर अब तक देशभर में 12 हजार से अधिक हृदय रोगी ठीक हो चुके हैं या स्वस्थ जिंदगी जी रहे हैं। रविवार को 108वें थ्रीडी हेल्थ केयर प्रोग्राम का शुभारंभ किया गया। इसमें देशभर से पहुंचे 125 हृदय रोगी भाग ले रहे हैं। इन रोगियों में कुछ डॉक्टर भी शामिल हैं।

हम बात कर रहे हैं ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मेडिकल विंग द्वारा चलाए जा रहे थ्रीडी हेल्थ केयर प्रोग्राम की। इसके तहत मुख्यालय शांतिवन द्वारा हर तीन माह में ट्रेनिंग कैंप आयोजित किया जाता है, जिसमें देशभर से 100 से अधिक हृदय रोगी भाग लेते हैं। इस दौरान उन्होंने ब्रह्ममुहूर्त में उठने से लेकर रात तक सोने की एक विधिवत दिनचर्या का पालन करना होता है। इसमें मुख्य रूप से दो बातों पर फोकस किया जाता है। पहला है सकारात्मक सोच और दूसरा है मेडिटेशन। हमें क्या सोचना है, कितना सोचना है, कैसे सोचना है और परमसत्ता से अपना संबंध कैसे स्थापित करना है। इसके अलावा ट्रेनिंग के दौरान सभी मरीजों को एक्सरसाइज और संतुलित आहार पर भी फोकस किया जाता है। आप सभी के स्वस्थ जीवन के लिए विश्व हृदय दिवस पर यह विशेष स्टोरी।

कैड प्रोजेक्ट के को-ऑर्डिनेटर व हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश गुप्ता ने बताया कि विभिन्न शोध में पाया गया है कि 95 फीसदी बीमारियों का कारण हमारा मन है। मेडिकल साइंस ने शरीर की बीमारियों का इलाज तो खोज लिया है लेकिन मन की बीमारियों का अभी तक कोई इलाज संभव नहीं हो पाया है। सिर्फ मेडिटेशन से ही मन के सभी प्रकार के रोगों का उपचार संभव है। सबसे मन में तनाव उत्पन्न होता है, जिससे शरीर में बीमारी आती है। मन की बीमारियों जैसे- जल्दबाजी, चिंता, गुस्सा, डर (डिप्रेशन), हाईपरटेंशन, जल्दी में रहना, असंतोष, नकारात्मक विचार से मन बीमार हो जाता है। जैसे मन में विचार होते हैं वैसा ही इनका शरीर पर प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे यह शरीर में विकृति (बीमारी) का कारण बनते हैं। इन सभी मानसिक विकृतियों का मुख्य कारण गलत जीवनशैली है।

मेडिटेशन से हम अपने जींस को भी मोडिफाई कर सकते हैं: शुभारंभ पर डॉ. गुप्ता ने कहा कि थ्रीडी हेल्थ केयर से हम अपने जींस को भी मोडिफाई कर सकते हैं। इस बात को ट्रेनिंग लेकर अनेक मरीजों ने साबित कर दिखाया है। मेरे पास एक मरीज आया जिसके पांचों भाई को हार्ट की दिक्कत थी, लेकिन उसने मेडिटेशन के अभ्यास से खुद को नार्मल इंसान की तरह स्वस्थ और फिट कर लिया।

प्रत्येक व्यक्ति एक यात्रा पर है, इसलिए अपना रोल बेहतर अदा करें: रेलवे महाप्रबंधक अमिताभ

यातायात एवं परिवहन प्रभाग की रिट्रीट में वरिष्ठ पदाधिकारियों का सम्मान समारोह आयोजित

शिव आमंत्रण, आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के यातायात एवं परिवहन प्रभाग की ओर से आयोजित सिल्वर रिफ्लेक्शन रिट्रीट में सोमवार को सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें प्रभाग से जुड़े देशभर के वरिष्ठ पदाधिकारियों का राजस्थानी पगड़ी, शॉल, माला पहना कर और स्मृति चिंह देकर सम्मान किया गया।

उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक अमिताभ ने कहा कि यह समय भारत और पूरे विश्व के लिए सौभाग्यपूर्ण समय है। बहुत जल्द रामराज्य आएगा और भारत लीड करेगा। हम लोग इस पृथ्वी पर इस जन्म में अपनी यात्रा पर हैं। सभी अपना-अपना रोल अदा कर रहे हैं। इसलिए अपना रोल बेहतर अदा करें। ब्रह्माकुमारी बहनें सेवा की यात्रा पर हैं। उन्होंने अपना जीवन जन कल्याण के लिए लगाया है। सेवा करने के बहुत तरीके हैं, अपने रोल को अदा करने के बहुत तरीके हैं। इस शरीर में विद्यमान हम सभी आत्मा हैं। सभी आत्माओं का स्वरूप एक जैसा है। ब्रह्माकुमारीज के हर शहर में सेवाकेंद्र हैं, आप सभी अपने स्थानीय सेवाकेंद्र पर जाकर आध्यात्मिक ज्ञान का लाभ लें और मेडिटेशन जरूर सीखें।

प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी बीके दिव्यप्रभा दीदी ने कहा कि मैंने जब से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ी हूं तो मन कभी विचलित नहीं होता है। क्योंकि परमात्मा हमें सिखाते हैं जैसा हम सोचते हैं, वैसा बनते जाते हैं। मेडिटेशन से हमारा मन सशक्त होता जाता है। इससे विपरीत परिस्थिति में हम विचलित नहीं होते हैं। जब हम परमात्मा को आधार बनाकर और उन्हें हर कार्य में आगे रखते हुए जीवन में चलते हैं तो सफलता निश्चित रूप से मिलती है। भगवान तो सुखदाता है, सुख देने वाला है। महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि प्रभाग द्वारा देशभर में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए अनुकरणीय कार्य किया जा रहा है। अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि आप सभी इसी तरह सेवाओं को आगे बढ़ाते रहें और जन-जन को जागरूक करते रहें।

प्रेरक वक्ता प्रो. ईवी गिरीश ने कहा कि खुशी का आधार है देना। जब हम जीवन में देना सीख जाते हैं तो जीवन में खुशी आने लगती है। उपाध्यक्ष डॉ. बीके सुरेश भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके किंजल बहन ने किया।

मास्को में राजयोग ध्यान का दिया संदेश

शिव आमंत्रण, मास्को, रुस। कुछ वर्ष पूर्व भारतीय अनिवासी क्लब (एनआरआई क्लब) की स्थापना की गई थी। इसका उद्देश्य रुस में रहने वाले भारतीयों की मदद करना और उन अनिवासी भारतीयों को नागरिक आदेश का सम्मान देना था जो रुस और भारत के बीच सामाजिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत करने के तरीके खोज रहे हैं। एनआरआई क्लब के संस्थापक और अध्यक्ष देवदत्तन नायर, पत्रकार और संपादक, मास्को हैं। क्लब का स्नेह मिलन आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से बीके सुधा दीदी ने भाग लिया और सभी को राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया।

निर्वैर भाई की प्रथम पुण्यतिथि मनाई

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के पूर्व महासचिव राजयोगी बीके निर्वैर भाई की प्रथम पुण्यतिथि 19 सितंबर को सर्वस्नेही दिवस के रुप में मनाई गई। देशभर से पहुंचे लोगों ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित कर उनके सेवाकार्यों को याद किया। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने उनकी याद में भोग लगाया। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि राजयोगी निर्वैर भाईजी के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि निर्वैर भाईजी ने अपना पूरा जीवन सामाजिक कार्यों में लगा दिया। ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने भी उनके साथ के अनुभव सांझा किए।

एक्सपो से दिखाई 25 वर्ष की सेवा यात्रा

शिव आमंत्रण, आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज के यातायात एवं परिवहन प्रभाग की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर शांतिवन के डायमंड हाल ने एक्सपो लगाई गई है। इसमें प्रभाग की 25 वर्ष की यात्रा व सेवा कार्यों को चित्रों और कलाकृतियों के माध्यम से बहुत ही सुंदर तरीके से दिखाया गया है। एक्सपो का उद्घाटन वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्ष बीके दिव्य प्रभा दीदी ने कहा कि देशभर में लोगों को सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा का संदेश देते हुए प्रभाग द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। प्रभाग द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों, रैली, सभा, सम्मेलन, नुक्कड़ नाटक के जरिए सड़क सुरक्षा का संदेश दिया जा रहा है। प्रभाग का उद्देश्य है कि लोग सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करते हुए वाहन चलाएं ताकि

देश में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके। स्कूली व कॉलेज के विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करने का कार्य किया जा रहा है। अतिरिक्त महासचिव बीके करुणा भाई ने कहा कि लोगों में जागरूकता लाकर ही हम देश में सड़क दुर्घटनाओं में कमी ला सकते हैं।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड,
जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV,
Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to:
shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331

Scan To Pay

ब्रह्माकुमारीज़ ने समाज, धर्म और देश के लिए त्याग, तपस्या और समर्पण किया: राज्यपाल

चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन आयोजित: 1500 पत्रकारों ने लिया भाग

शिव आमंत्रण, आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया विंग द्वारा चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन (26 से 30 सितंबर) का आयोजन किया गया। राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने सम्मेलन का शुभारंभ किया। इसमें देशभर से प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, रेडियो और वेब मीडिया से जुड़े 1500 से अधिक पत्रकार, संपादक और संवाददाताओं ने भाग लिया। महासम्मेलन में विद्वान वक्ताओं ने शांति, एकता और विश्वास विषय पर मंथन-चिंतन किया।

शुभारंभ पर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि मुझे यहां आकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। समाज में शांति, एकता और विश्वास को बढ़ावा देने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ भी कहते हैं। मीडिया लोकतंत्र की जड़ों को सींचकर सदा हरा रखने का कार्य करता है। लोकतंत्र में जो चुनकर आते हैं, जाति के आधार पर नहीं, विचार और देशहित के आधार पर चुनाव लड़े तो लोकतंत्र और मजबूत होगा। मीडिया को इस पर फोकस करना चाहिए।

संस्कृति बचाने का कार्य कर रही है ब्रह्माकुमारीज़

राज्यपाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक आध्यात्मिक विश्वविद्यालय है। प्राचीन भारतीय संस्कृति ज्ञान का प्रचार-प्रसार करता रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। संस्था नशामुक्ति, पर्यावरण जागरण, अंधविश्वास दूर करने का भी काम कर रही है। ब्रह्मा बाबा ने इसकी स्थापना की। उनका हीरे का व्यापार था। ब्रह्माकुमारीज़ गांव-गांव में जाते हैं। लोगों को शांति और तरक्की का रास्ता बताते हैं। विश्व में महिलाओं का इतना बड़ा संगठन नहीं है, जितना ब्रह्माकुमारीज़ का है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्कृति बचाने का कार्य कर रही है। ब्रह्माकुमारीज़ ने त्याग, तपस्या और समर्पण किया है। ये देश, धर्म, समाज के लिए समर्पण किया है।

हमारा उद्देश्य प्रचार करना नहीं था...

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने कहा कि मुझे जर्नलिस्ट ब्रह्माकुमारी चाहिए तो मैं पढ़ने के लिए गई। मीडिया का एक मतलब प्रमोशन होता है। बाबा की इच्छा थी सबको ये संदेश मिले। करीब 60-70 देशों में जाना हुआ। हमारा उद्देश्य प्रचार करना नहीं था, हम चाहते थे आपके मन को शांति मिले। हिंसा, स्वार्थ बढ़ रहा है। होनी तो 'पीस' चाहिए पर अब 'पीसेस' हो रहे हैं। हमारी भावना पत्रकारों को शांति, ज्ञान, सुख दें। उन्होंने कहा कि मैं कई देशों में बड़े-बड़े पत्रकारों से मिली। एक तो मुस्कुराना भूल गया था। ब्रह्माकुमारीज़ में हर कोई मुस्कुराता नज़र आता हैं। शांति हम सबका स्वधर्म है। शांति के सागर हमारे पिता हैं। इसका अभ्यास करें, ये हमारा स्वभाव बन जाएगा। शांति अपने मन से शुरू होती है।

ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया विंग के अध्यक्ष बीके करुणा भाई ने कहा कि हम हर वर्ष में दो बार मीडिया कॉन्फ्रेंस आयोजित करते हैं। हमारा उद्देश्य प्रचार नहीं बल्कि हर मानव को आनंद का अनुभव हो, इसलिए आयोजन करते हैं। एक समय आध्यात्मिक खबरें प्रकाशित करने का निवेदन करते थे, आज हम देखते हैं कि अच्छी, आध्यात्मिक खबरें भी छपती हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल के प्रो. डॉ. संजीव गुप्ता ने कहा कि विश्वास और पारदर्शिता भारी शब्द लगते हैं, लेकिन इन्हें जीवन में उतारना उतना ही सरल है। जब हम प्रभु से संवाद करते हैं तो क्या कोई तैयारी करते हैं, बस शुद्ध मन चाहिए।

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय रायपुर के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. मानसिंह परमार ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के जितने भी मीडिया महासम्मेलन हुए हैं, उनमें पारित प्रस्ताव हुए हैं, अच्छी पत्रकारिता के लिए उससे अच्छी आचार संहिता हो ही नहीं सकती। हमें उसे सरकार को सौंपना चाहिए। हमें चाहिए कि समाज आगे बढ़े, देश विश्वगुरु बने, संस्था के प्रयासों को पूरे विश्व में फैलाएं।

जयपुर मनिपाल विश्वविद्यालय की मीडिया, कम्युनिकेशन एंड फाइन आर्ट्स विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर वैशाली चतुर्वेदी ने कहा कि मीडिया को अपने दर्शकों से वही विश्वास बनाने की जरुरत है, जैसा विश्वास एक बच्चे को अपने पिता पर होता है, जब उसे वह हवा में उछाल रहे होते हैं। जरुरत है सोशल मीडिया डिटॉक्स की। सकारात्मक ऊर्जा को अपने अंदर भरना होगा। हम अपराध और युद्ध की खबरों से घिरे हुए हैं। टीआरपी की जंग, कार्पोरेट प्रेशर में चल रहे पत्रकार अपने दर्शकों को पारदर्शिता नहीं दे पाता।

इन्होंने भी किया संबोधित... हैदराबाद से आईं मीडिया विंग की उपाध्यक्ष बीके सरला दीदी, इंदौर से आए वरिष्ठ पत्रकार क्रांति चतुर्वेदी, मप्र भोपाल के माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रो. संजय द्विवेदी, डॉ. बीआरए विश्वविद्यालय आगरा के पत्रकारिता और जनसंचार विभाग के असिस्टेंट प्रो. डॉ. संदीप शर्मा,गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद के पत्रकारिता और जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. विनोद कुमार पांडे, भुवनेश्वर से आए वरिष्ठ पत्रकार संग्राम केशरी सारंगी, विंग के राष्ट्रीय संयोजक बीके सुशांत भाई, आगरा की आरजे राखी त्यागी, नोएडा के पत्रकार कुमार नरेंद्र सिंह, हैदराबाद के इंटरनेशनल चैम्बर ऑफ पब्लिक रिलेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार अग्रवाल, राष्ट्रपति पदक प्राप्त ज्योतिषी और लाइफ कोच कोलकाता डॉ. सोहिनी शास्त्री, दिल्ली से पब्लिक रिलेशन्स सोसाइटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजित पाठक ने भी संबोधित किया। विंग के राष्ट्रीय संयोजक बीके शांतनु भाई ने स्वागत भाषण दिया। राष्ट्रीय संयोजक बीके सुशांत भाई, रायपुर से वरिष्ठ पत्रकार प्रियंका कौशल, विशाल यादव ने भी संबोधित किया।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

शारीरिक व्याधि, वैराग्य और जीवन दर्शन

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। रोग, पीड़ा, बीमारी, व्याधि.... ये शब्द जेहन में आते ही एक नकारात्मक तस्वीर मन-मस्तिष्क में उभर आती है। जीवन यात्रा में हर मनुष्य शारीरिक व्याधियों से गुजरता है। कोई भी नहीं चाहता है कि उसका इन शारीरिक व्याथियों और तकलीफों से सामना हो। कई बार शारीरिक व्याधियां असमय ही दस्तक दे देती हैं जो असहनीय दर्द, तकलीफ के साथ अच्छे-बुरे अनुभवों की विरासत छोड़ जाती हैं। व्याधि के दौरान मनोवैज्ञानिक रूप से मन में संसार और सांसारिक मोह-माया से उपराम एवं साक्षी भाव आ जाता है। ऐसी अवस्था में मानव मन अतीत की यादों और भविष्य के सुनहरों सपनों को भुलाकर वर्तमान की पीड़ा से निकलने के लिए आतुर रहता है। जीवन और संसार के प्रति पूर्ण वैराग्य आ जाता है, जोकि हजारों पुस्तकें, वेद-ग्रंथ, शास्त्र पढ़ने के बाद भी विरले ही होता है। पीड़ा की स्थिति में मानव को जीवन यात्रा के सभी सुकर्म, विकर्म, दुआ, बद्दुआ, पाप-पुण्य मानस पटल पर किसी चलचित्र की तरह चलायमान प्रतीत होने लगते हैं। वह जल्द से जल्द उस अवस्था से बाहर आकर एक नई शुरुआत करना चाहता है। नए और बेहतर तरीके से जीने के आतुर रहता है लेकिन कई परिस्थितियों में देर हो चुकी होती है। वहीं जो इंसान ऐसी परिस्थितियों से बाहर निकल आता है, जीवन के मायने, उद्देश्य को जान चुका होता है, उसे अब संसार के प्रति वह आसक्ति का भाव नहीं रहता है। ऐसा मन तृष्णा, द्वेष, ईर्ष्या से ऊपर उठ जाता है।

जीवन में जब तक किसी भी तरह की विकराल परिस्थिति, समस्या या व्याधि के चलते मन में कठोर आघात नहीं लगता है, तब तक चेतना का जागरण मुश्किल ही है। चेतना तभी जागती है जब उस पर तीव्र और कठोर प्रहार किया जाए। जिस मनुष्य की चेतना समय रहती जाग जाती है, ऐसे व्यक्तित्व जीवन में असाधारण कार्य कर जाते हैं।

प्रभु के समीप जाने का आधार है वैराग्य-

मन ईश्वर के ध्यान में तभी रम सकता है जब व्यक्ति, वस्तु, वासना, वसुधा से ऊपर उठ गया हो। अंतर्मन ने यह वास्तविकता और परम सत्य स्वीकार कर लिया हो कि इस संसार में परमात्मा की याद के अलावा सब नश्वर है, क्षणभंगुर, अस्थायी और मिथ्या है। एक ईश्वर की याद ही जन्मोंजन्म का भाग्य बनाने वाली, जीवन नैया और भव-सागर से पार लगाने वाली है। जीवन के प्रति वैराग्य भाव ही हमें प्रभु के समीप ले जाता है। सांसारिक लालसाओं, चाहना में फंसा मन ईश्वर की समीपता और निकटता के सुख का अनुभव नहीं कर सकता है। वैराग्य भाव कठोर शारीरिक व्याधि में स्वाभाविक रूप से मन-मस्तिष्क में समा जाता है। ऐसे में मन-बुद्धि के पास न कोई तर्क होता है और न ही बहाना। वह अपनी सांसों को सिर्फ और सिर्फ ईश्वरीय ध्यान और याद में सफल करने के लिए आतुर रहता है। ऐसे इंसान को मान-अपमान, पद- प्रतिष्ठा नगण्य लगने लगती है। वैराग्य भाव के बिना जीवन की आध्यात्मिक यात्रा अधूरी है। यह भाव संसार के प्रति विरक्ति लाकर ईश्वरीय प्रेम का अमृतपान कराता है। सृष्टि चक्र में अनेक संत-महात्मा हुए हैं जिनकी अंतर्चेतना जब जाग गई तो उन्होंने राज-पाठ छोड़कर ईश्वर को पाने के लिए जंगल की ओर प्रस्थान कर गए। हॉस्पिटल, श्मशान घाट ही वह स्थान हैं जहां मनुष्य को क्षणभंगुर ही सही लेकिन संसार मिथ्या प्रतीक होने लगता है। इस जीवन से वैराग्य आने लगता है।

आत्म ज्ञान, परमात्म ज्ञान ही जीवन दर्शन का आधार-

जीवन दर्शन अर्थात् जीवन को देखने का दृष्टिकोण या जीवन के प्रति हमारी सोच। जब जीवन दर्शन आध्यात्म से ओतप्रोत होता है तो मन आत्मज्ञान की ओर स्वतः ही बढ़ जाता है। आत्म ज्ञान, परमात्म ज्ञान ही जीवन दर्शन का आधार है। आत्म साक्षात्कार और आत्म ज्ञान के बिना परमात्म ज्ञान को समझना, उसे जीवन में उतारना, परमात्मा के अंग-संग और समीपता की अनुभूति करना संभव नहीं है। व्याधि की अवस्था में मनुष्य को जीवन के समुचित पहलुओं, वर्तमान, अतीत और आगम का भलीभांति ज्ञान हो जाता है। वह इस वास्तविकता से रुबरु हो जाता है कि जीवन का अंतिम सत्य क्या है? क्या करना है? जीवन का लक्ष्य क्या बनाना है? जीवन कैसे जीना है? जीवन को महान, प्रेरक और आदर्शमूर्त कैसे बनाना है?

स्वस्थ शरीर सबसे बड़ा सौभाग्य, सुख और धन है-

आरोग्यं परमं भाग्यं, स्वास्थ्यं परमं सुखम्। संतोषात् परं नास्ति, तुष्टिः परमं धनम।। अर्थात् स्वस्थ शरीर सबसे बड़ा सौभाग्य, सुख और धन है। संतोष से बढ़कर कोई चीज नहीं और संतोष ही सच्चा धन है। इन वाक्यों की गहराई, महत्वता और सच्चाई तभी ज्ञात होती है जब इंसान अपने स्वास्थ्य को गंवा चुका होता है। जाने-अनजाने में की गई गलतियों, कर्मों के परिणामस्वरूप जब स्वास्थ्य हाथ से निकल जाता है तब स्वस्थ शरीर की महत्वता का भलीभांति ज्ञान होता है। समय रहते जो इस परम ज्ञान को जाने लेता है, उसे अपने जीवन में शिरोधार्य कर स्वास्थ्य नियमों का पालन करते हुए ईश्वरीय ज्ञान-ध्यान को जीवन का उद्देश्य बना लेता है वह समाज में आदर्श प्रस्तुत करते हुए जीवन को सफल करता है। भाव यही है कि अध्यात्म के पथिकों को यदि आत्म कल्याण, विश्व कल्याण की राह पर आदर्श प्रस्तुत करना है तो आरोग्यं परमं भाग्यं, स्वास्थ्यं परमं सुखम्.... को जीवन में महत्वा देना होगी। वैराग्य भाव के साथ सांसों-सांसों ईश्वरीय ध्यान, याद और सेवा को लक्ष्य बनाना होगा। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है और स्वस्थ मन ही ईश्वर के ध्यान में रम सकता है।

बीके शिवानी दीदी, अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता

कलियुग में सतयुगी बन कर रहना ही राजयोग

अगर हम पुराने तरीके से सोचते रहें, बोलते रहें, करते रहें तो खुशी, सेहत और सुंदर रिश्ते संभव नहीं हैं

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

आने वाले समय में दुःख और बढ़ने वाला है। लोग झूठ बोलते हैं, गलतियां करते हैं, धोखा देते हैं, कहना नहीं मानते, वो कलियुग है। उसके बीच रहते हुए मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं। देखें अपने आपको मैं आत्मा सतयुग बना रही हूं। मैं आत्मा अपनी बैटरी को चार्ज कर रही हूं। खुद से पूछे मैं आत्मा कैसी हूं? मेरी हर सोच, मेरा बात करने का तरीका, मेरा व्यवहार कैसा है? कुछ ऐसे लोगों को अपनी आंखों के सामने लेकर आएं जो हमारे अनुसार नहीं हैं। जिनके व्यवहार के संग में आकर हम भी कलियुग वाले हो जाते हैं। वो तो कलियुग में हैं कलियुग वाला व्यवहार करेंगे ही हमारे सामने। जो उनके लिए सही वो सही है। अब देखें अपने आपको- मैं आत्मा सतयुग में हूं। मेरा युग और उनका युग ही अलग है। मेरे संस्कार और उनके संस्कार ही अलग हैं।

हमें सतयुग बनाना है। अगर हमें सतयुग बनाना है तो कलियुग के लोगों से बिल्कुल डिफरेंट होना पड़ेगा। जब आपके आस-पास के लोग फोटो खींच रहें हो तो उस क्षण हम क्या करेंगे? मोबाइल जेब में रहने देंगे। लेकिन ये भी ख्याल करना है कि हमें सतयुग बनाना है। एक तो हमें कलियुग की फोटो की जरूरत नहीं है। दूसरी उस दृश्य को हम इस तरह देख रहें हैं कि वह दृश्य सतयुग वाला हो जाए। फिर वो लोग उस दृश्य का फोटो खींचते रहें। हम उस सतयुगी दृश्य को बनाएंगे। वो लोग उस दृश्य का फोटो खींचकर खुशी मनाएंगे। अब हमारा तो रोल चैंज हो गया। अगर हमें सतयुग बनाना है तो दो बातें हैं- एक है सतयुग में जाना और दूसरा है सतयुग हमें बनाना है। दोनों बातों में बहुत फर्क है।

कलियुग में सतयुगी बनकर रहना ही राजयोग

जब हम पीसफुल, निःस्वार्थ, प्रेममयी, शुद्ध आत्मा, स्वभाव संस्कार से बिल्कुल स्टेबल होंगे तो सतयुग महसूस होगा। अगर सामने वाला कलियुग में है तो कलियुग में गुस्सा करना, झूठ बोलना, धोखा देना एलाउ है। लेकिन सतयुग में गुस्सा करना नॉट एलाउड है। सतयुग में बुरा महसूस करना, रोना, उल्टा जवाब देना नॉट एलाउड है। अब ये कलियुग और सतयुग इक्कट्ठे रह पाएंगे? सतयुगी संस्कार लेकर सतयुग में रहना ये तो कोई भी कर सकता है। हमारे साथ सब प्यार से बात करें तब हम भी प्यार से बात करें, तो उसमें क्या ताकत चाहिए? वो तो कोई भी कर सकता है। सतयुग में सतयुगी जैसा रहना सबसे आसान है। कलियुग में कलयुगी जैसे रहना बहुत आसान है। कोई भी कर सकता है। लेकिन कलियुग में सतयुगी होकर रहना वो राजयोग मेडिटेशन है।

मान लिया कि आपके आसपास लोग गलत प्रकार का भोजन खा रहें हैं। कोई जंक खा रहा, कोई सड़क पर बैठ कर पानी पुरी खा रहा है, कोई फ्राइड खा रहा, कोई सड़क पर बैठ

> एक से ही होती है नव संस्कारों की उत्पत्ति

कर नॉनवेज खा रहा है। आपको पता लग गया ये सब गलत भोजन है लेकिन 25-30 साल पहले आप भी वही खाना खा रहे थे। अब एक दिन जागृति आई कि मुझे ये सब भोजन नहीं चाहिए। क्योंकि मेरा शारीरिक-मानसिक रिजल्ट ठीक नहीं रहा तो मुझे आज से हेल्थ चाहिए। तो हमने निर्णय ले लिया मुझे नहीं खाना। तो आसपास के लोग थोड़ी ही खाना बंद कर देंगे? क्योंकि उन्होंने निर्णय नहीं लिया है। निर्णय किसने लिया है? हमने लिया है। जिस दिन हमने निर्णय लिया आसपास के लोग कुछ और खा रहें हों और मुझे कुछ और खाना है ये संभव है। हां ये आसान है ऐसा संकल्प ले लेंगे तो हो जाएगा। ये बिल्कुल सहज है। ऐसे समय पर हम आसपास के लोगों से ज्यादा उमीदें नहीं करने हैं। लोग तो हमें वही खिलाने की कोशिश करेंगे जो वो खा रहे हैं। जब कई बार हम नहीं खाएंगे तो वो हमारा मजाक भी उड़ाएंगे, चिढ़ाएंगे भी खा लो-खा लो थोड़ा सा। लेकिन जिसने निर्णय ले लिया वो आत्मा क्या करेगी? अगर हमारे पास वो पावर है ये निर्णय लेने की तो मुझे कोई प्रलोभित नहीं कर सकता। भले मेरे आसपास चारों तरफ लोग अनहेल्दी खाना खा रहे हों, पी रहा हो। अगर कोई कुछ भी खा पी रहा है और हम नहीं खाएंगे ये तो कर सकते हैं ना। कोई कुछ भी बोल रहा है और हम वैसा नहीं बोलेंगे। अगर ऐसा नहीं कर सकते तो क्यों नहीं कर सकते?

सिर्फ हमें अपने आप से पूछकर ये निर्णय लेना है। अगर निर्णय लेते हुए गलती से हमने अपने मन को कह दिया इतना सारा पढ़ने के बाद भी ये करना तो आसान नहीं है। तो मन क्या करेगा? फिर मन ये कहेगा आश्रम में बैठकर ये सब बातें करना बहुत आसान होता है। इतना समझने के बाद भी ये सब होने वाली नहीं हैं। फिर मन ये कहेगा ये सब बात इन बहनों को क्या पता? इन्होंने बच्चे पाले कभी? इनको मालूम है बच्चों को संभालने के लिए आज क्या-क्या करना पड़ता है? जैसे ही मन ने ऐसे वार्तालाप करना शुरू की तो हमने अपने आपको क्या छूट दे दी? छोड़ दो उनको बनाने दो सतयुग, जब सतयुग बन जाएगा तो हम उसमें चले जाएंगे।

हमें अपनी क्वालिटी ऑफ लाइफ सुधारना होगी

महत्वपूर्ण यह है कि इस कलियुग को कैसे पार करना है? दिन प्रतिदिन हमारी क्वालिटी ऑफ लाइफ क्या होती जा रही है? बाहर साधनों के हिसाब से क्वालिटीज ऑफ लाइफ तो बहुत अच्छी होती जा रही है। लेकिन पर्सनल क्वालिटी ऑफ लाइफ बुरी और छोटी होती जा रही है। बुरी क्यों होती जा रही है? क्योंकि हम उसे होने देते हैं। सब लोग गुस्सा करते हैं तो गुस्सा तो करना पड़ता है। कलियुग के लोगों को नकल कर-कर के स्वतः हम लोग भी कलयुगी हो जाएंगे। कलियुग कैसे बनता है? कुछ लोग कलियुगी संस्कार क्रियेट करते हैं। बाकी सबलोग उनको नकल करते हैं।

एक से होती है कलियुग की शुरुआत

मान लिया आज तलाक आम बात हो गया है, लेकिन कभी न कभी किसी एक ने ही शुरुआत की होगी। सबने इक्कट्ठे तो नहीं शुरू किया होगा। किसी एक ने शुरू किया होगा। जिस समय पहले एक ने जब तलाक दिया होगा तो उस समय समाज ने क्या कहा होगा? ऐसा कैसे कर सकते हैं? और ये कितने साल पुरानी बात होगी? लगभग 50 साल। 50साल पहले हमारी मान्यता क्या थी? शादी हो गई या अब वहीं रहना है? चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों। ऐसा थोड़ी ही है कि उससे पहले चुनौतियां नहीं थीं। बहुत चुनौतियां थीं बहुत परिस्थितियां थीं। हर तरह के संस्कार थे लेकिन यहां दिमाग में मान्यता थी कि शादी हो गई अब यहां ही रहना है। माता-पिता बेटी को क्या कह के भेजते थे, अब वहीं रहना है। आज क्या बोलते हैं? मुश्किल आ रही है तो वापस आ जाओ। तंग कर रहे हैं तो वापस आ जाओ। तो ये मान्यता क्यों चेंज हुई?

किसी एक ने किया, दो ने किया, पांच ने किया बाकी ने नकल किया और धीरे-धीरे समाज ने क्या कहा? ये तो आम बात है। जैसे ही समाज ने इस बात को मुहर लगा दी ये सब अब आम बात है फिर बहुतों ने किया। हमारे दादा-दादी की जो पीढ़ियां हैं उस समय बाहर भोजन नहीं करते थे। ऐसी कोई धारणा नहीं थी। कोई उस समय कहता बाहर खाना खाने जाना है तो अजीब लगता था। बाहर खाना खाने कौन जाता है? आज के बच्चे कहते हैं घर कौन खाना खाएगा? ये सारा खेल इस 50-100 सालों में बहुत कुछ हमने बदल दिया। एक ने किया, दो ने किया, पांच ने किया बाकी ने नकल किया। कलियुग इसी तरह नीचे गिरता गया।

समस्या- समाधान

स्व उन्नति के लिए अपनी अवस्था का चार्ट बाबा को दें

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

> दिन में कई बार सहज समाधि का अभ्यास करना जरूरी है

अब दिनचर्या में इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि यदि अधिक न भी हो सके तो सायंकाल तक कम-से-कम सात बार विशेष रूप से ईश्वरीय स्मृति में बैठने का समय मिले, ताकि प्रतिदिन ईश्वरीय स्मृति में आठ घंटे स्थित होने का ईश्वरीय निर्देश यदि हम पूरा न भी कर सकें तो कम से कम 3-4 घंटे हर हालत में इसका अभ्यास करें। देखा गया है कि जो मनुष्य लौकिक अथवा स्थूल कार्यों में दिनभर लगातार लगा रहता है और इसमें अपनी बुद्धि, कर्मेन्द्रियों को इस प्रकृति के जगत से हटाकर प्रभु की ओर लगाने का अभ्यास नहीं करता, उसका पुरुषार्थ तीव्र नहीं हो पाता। अतः चाहे कैसा भी व्यस्त जीवन क्यों न हो दोनों बार भोजन करने से कुछ पहले एवं भोजन के समय, प्रातः उठते ही और रात्रि को भी सोने से पहले, संध्या और रात्रि को क्लास में अथवा घर पर, एक बार दोपहर में कम-से-कम सात बार और 15-15 मिनट तो ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास करना ही चाहिए।

- राजयोगी बीके सूरज भाई, माउंट आबू

जब भोजन हमारे सामने परोसा जाए तो उससे पहले ही स्व-स्थिति एवं प्रभु-स्मृति में बैठने से अवस्था अव्यक्त बनी रहती है।

देखा गया है कि मनुष्य व्यस्तता के अनेक बहाने बनाकर योगाभ्यास के इन स्वर्णिम अवसरों को खो देता है। इससे न केवल यह हानि होती है कि उसके योग की सूक्ष्मता आगे-आगे नहीं बढ़ती बल्कि योग का अभ्यास टूट जाने से और छूट जाने से उसकी अवस्था व्यक्त होने लगती है और वह व्यवहारी और संसारी बनने लगता है। अतः अन्य कार्यों से भी इसे आवश्यक समझकर जन्म-जन्मान्तर की कमाई का साधन मानकर, ईश्वर द्वारा दिया निर्देश जानकर, चाहे कैसे भी बन पाए समय निकालना ही चाहिए। मनुष्य को ऐसे ही समझ लेना चाहिये कि प्रभु का तार आ गया है, ट्रंक कॉल आ गया है अथवा मेरे लिए कोई आवश्यक संदेश आ गया है अथवा आना है। मैं चलते-फिरते, उठते-बैठते योग लगा लूंगा ऐसा सोचकर विशेष तौर पर प्रभु-मिलन के लिए बैठने और योग अभ्यास करने को छोड़ देना हानिकारक है। कार्य करते हुए भी ईश्वरीय स्मृति में रहने का पुरुषार्थ तो करना ही चाहिए परन्तु इसके अतिरिक्त विशेष तौर पर दिनभर में कई बार सहज समाधि का अभ्यास अथवा अनुभव करने से स्थिति अच्छी बनी रहती है।

सावधानी देने वालों से संपर्क बनाए रखें-

अवस्था में कुछ कमज़ोरियां आ जाने का एक कारण यह भी होता है कि मनुष्य को सावधानी देने वाले, उसकी त्रुटियां उसे बताने वाले और उसकी स्थिति को फिर से ठीक रखने, निर्देश देने और अंकुश में रखने वाले से उसका सम्पर्क टूट जाता है। जब तक मनुष्य की अवस्था सम्पूर्ण और निर्दोष न हो जाए तब तक उसे अवश्य ही किसी ऐसे निर्देशक की आवश्यकता रहती ही है जो उसकी उन्नति के लिए, हित की बात बताए। परन्तु देखा गया है कि कुछ लोग थोड़ा-सा भी ईश्वरीय ज्ञान सुनने के पश्चात और सेवा में जुटने के बाद ऐसा कोई संग नहीं बनाए रखते। वे किसी को भी अपनी अवस्था का सारा हिसाब खोलकर नहीं बताते जिससे कि आगे के लिए उन्हें दिशा-निर्देश मिले। इसका परिणाम यह होता है कि वे स्वयं या तो अपनी कमियों को देख नहीं पाते या उन्हें दूर नहीं कर पाते और उसके परिणाम स्वरूप उन्हें यह देखकर निराशा होती है कि उनकी कोई प्रगति नहीं हो रही। या वे स्वयं में ही मिथ्या तुष्टि का अनुभव करते हुए जहां खड़े थे, वहीं खड़े रहते हैं। अतः उत्तरोत्तर उन्नति चाहने वाले मनुष्य को अपने पुरुषार्थ में तीव्रता लाने के लिए अपनी अवस्था का ब्यौरा देना जरूरी है।

नाम, मान, शान अथवा प्राप्ति की आकांक्षा-

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ईश्वरीय ज्ञान और योग की शिक्षा प्राप्त करने के बाद ईश्वरीय सेवा तो करते हैं परन्तु साथ-साथ अपने कार्य के फलस्वरूप नाम अथवा यश पाने की आकांक्षा करते हैं। जो सेवा वे करते हैं उसमें वे नम्र भाव से, स्वयं को एक सेवाधारी अथवा निमित्त साधन मानने की बजाय, एक कुशल और योग्य कार्यकर्त्ता मानने लगते हैं और प्रतिष्ठा, सुविधा और सत्कार पाने की आकांक्षा मन में रख लेते हैं। यदि उनकी यह इच्छा पूरी होती जाए तो वे इसमें और भी अधिकाधिक फंसते जाते हैं अर्थात् और अधिक यश प्राप्त करने की लालसा से उनके पास योगाभ्यास व पुरुषार्थ के लिए न तो एकान्त और शान्त में बैठने का समय बच पाता है और न ही आत्म-चिन्तन और आत्म-निरीक्षण की टेव उन्हें रहती है।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Oct. 2025
» प्रकाशक व मुद्रक: करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादक: बीके कोमल » संयुक्त संपादक: बीके पुष्पेन्द्र